Bachelor of Arts (DDE)

Semester – II

Paper Code – BA2008-II

SANSKRIT – II

संस्कृत – II

DIRECTORATE OF DISTANCE EDUCATION

MAHARSHI DAYANAND UNIVERSITY, ROHTAK

(A State University established under Haryana Act No. XXV of 1975)
NAAC 'A+' Grade Accredited University

Material Production

Content Writer: *Dr. Shri Bhagwan*

Copyright © 2020, Maharshi Dayanand University, ROHTAK

All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means; electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the written permission of the copyright holder.

Maharshi Dayanand University
ROHTAK – 124 001

ISBN :

Price : Rs. 325/-

Publisher: Maharshi Dayanand University Press

Publication Year : 2021

पाठ्यक्रम
संस्कृत – II, बी०ए० (द्वितीय सेमेस्टर)
Paper Code : BA2008-II

Maximum Marks : 80
समय : 3 घण्टे

घटक – I संस्कृत व्याकरणम् अंक 48

(क) शब्दरूप – राम, कवि, भानु, पितृ, लता, मति, नदी, धेनु, वधू, मातृ, फल, वारि, मधु, आत्मन्, दण्डिन्, वाच्, सरित्, सर्व, तद्, एतद्, यद्, किम्, इदम् (तीन लिंगों में), अस्मद्, युस्मद्, एक, द्वि, त्रि, चतुर्, पंचन् (तीनों लिंगों में)

(ख) धातुरूप परस्मैपदम् – भू, पठ्, हस्, नम्, गम्, अस्, हन, क्रुध, नश्, नृत्, अद्, इष्, पृच्छ, चिन्त्

आत्मनेपदम् – सेव, लभ्, रुच्, मुद्, याच्

उभयपदम् – कृ, नी, हृ, भज्, पच्

(ग) सन्धि – अच् सन्धि, हल् सन्धि, विसर्ग सन्धि

घटक – II छन्द अंक 27

अनुष्टुप्, आर्या, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, मालिनी, स्रग्धरा, वंशस्थ, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडितम्

घटक – III कण्ठस्थश्लोकाः अंक 5

कण्ठस्थ चार श्लोकों का शुद्ध लेखन (प्रश्न पत्र में छपे श्लोकों से भिन्न)

दिशा–निर्देश

घटक – I (क) आठ शब्दों में से किन्हीं चार के सम्पूर्ण रूप $4 \times 4 = 16$

(ख) आठ धातुओं में से किन्हीं चार के पूछे गए दो लकारों में सम्पूर्ण रूप

(लट्, लृट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकार) $4 \times 4 = 16$

(ग) चौदह में से किन्हीं आठ प्रयोगों में सन्धि अथवा सन्धिविच्छेद $8 \times 2 = 16$

घटक – II छः में से किन्हीं तीन छन्दों में लक्षण व उदाहण $9 \times 3 = 27$

घटक – III कंठस्थ दो श्लोकों का लेखन (प्रश्न पत्र से भिन्न) $2^1/_2 \times 2 = 5$

विषय सूची

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
इकाई – 1 :	**संस्कृत व्याकरणम्**	1 – 65
1.1	परिचय	
	1.1.1 शब्दरूप	
	1.1.2 धातुरूप	
	1.1.3 सन्धि	
1.2	इकाई के उद्देश्य	
1.3	संस्कृत व्याकरणम्	
	1.3.1 शब्दरूप	
	1.3.2 धातुरूप	
	1.3.3 सन्धि	
1.4	अपनी प्रगति जांचिए	
1.5	सारांश	
1.6	मुख्य शब्दावली	
1.7	अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर	
1.8	अभ्यास हेतु प्रश्न	
1.9	आप ये भी पढ़ सकते हैं	
इकाई – 2 :	**छन्द**	66 – 78
2.1	परिचय	
2.2	इकाई के उद्देश्य	
2.3	छन्द प्रकरणम्	
2.4	अपनी प्रगति जांचिए	
2.5	सारांश	
2.6	मुख्य शब्दावली	
2.7	अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर	
2.8	अभ्यास हेतु प्रश्न	
2.9	आप ये भी पढ़ सकते हैं	
इकाई – 3 :	**कण्ठस्थश्लोकाः**	79 – 83
3.1	परिचय	
3.2	इकाई के उद्देश्य	
3.3	कण्ठस्थश्लोकाः	
3.4	अपनी प्रगति जांचिए	
3.5	सारांश	
3.6	मुख्य शब्दावली	
3.7	अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर	
3.8	अभ्यास हेतु प्रश्न	
3.9	आप ये भी पढ़ सकते हैं	

इकाई – 1

संस्कृत व्याकरणम्

इकाई की रूपरेखा

1.1 परिचय

1.1.1 शब्दरूप

1.1.2 धातुरूप

1.1.3 सन्धि

1.2 इकाई के उद्देश्य

1.3 संस्कृत व्याकरणम्

1.3.1 शब्दरूप

1.3.2 धातुरूप

1.3.3 सन्धि

1.4 अपनी प्रगति जांचिए

1.5 सारांश

1.6 मुख्य शब्दावली

1.7 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर

1.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

1.9 आप ये भी पढ़ सकते हैं

1.1 परिचय

1.1.1 शब्दरूप

शब्द–रूप सुबन्त प्रकरण (अजन्त और हलन्त शब्दों के रूप)

संज्ञा शब्द दो प्रकार के होते हैं – अन्जत और हलन्त। अजन्त शब्द वे हैं जिनके अन्त में स्वर हो। हलन्त उन शब्दों को कहते हैं जिनके अन्त में कोई व्यंजन हो। अजन्त शब्दों को अकारान्त, आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त आदि भागों में बांटा गया है। पुल्लिंग में सभी अकारान्त शब्दों के रूप एक समान चलते हैं। इसी प्रकार अकारान्त और इकारान्त शब्दों के रूप समान रूप से चलते हैं। स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग शब्दों को भी किसी आधार पर आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त आदि भागों में बांटा गया है। शब्दों में सुप् आदि प्रत्यय लगते हैं। अतः शब्द रूपों को सुबन्त कहा जाता है।

पाठ्यक्रम में निर्धारित संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों के रूप नीचे दिए जा रहे हैं।

1.1.2 धातु–रूप

भ्वादि दस गणों में क्रियावचन शब्द धातु कहलाता है। धातुओं में तिङ् आदि प्रत्यय जुड़ते हैं। अतः धातु रुपों को तिङन्त कहा जाता है।

दस गण और उनके विकरण – विकरण उस वर्ण समूह को कहते हैं जो प्रकृति (धातु) और प्रत्यय (तिङ्) के मध्य में पड़ता है। इसे उप–प्रत्यय भी कहा जाता है।

	गण	विकरण	उदाहरण
1	भ्वादि	शप् (अ)	भवति
2	अदादि	शप् का लोप (०)	अत्ति
3	जुहोत्यादि	शप् का श्लु (उ)	जुहोति
4	दिवादि	श्यन् (य)	दीव्यति
5	स्वादि	श्नु (नु)	सुनोति
6	तुदादि	श (अ)	तुदति
7	रुधादि	श्न (न)	रुणद्धि
8	तनादि	उ (उ)	तनोति
9	क्र्यादि	श्ना (ना)	क्रीणाति
10	चुरादि	णिच् (इ)	चोरयति

परस्पैदी आत्मनेपदी एवं उभयपदी धातुएं – जिन धातुओं में, ति, तः, अन्ति आदि परस्मैपद प्रत्यय आते हैं, वे परस्मैपदी धातु होते हैं। जिनमें त, आताम्, झ आदि आत्मनेपद प्रत्यय आते हैं, उन्हें आत्मनेपदी धातु कहा जाता है। 'संस्कृत में कुछ धातुएं ऐसी भी हैं, जिनमें ये दोनों प्रकार के प्रत्यय आते हैं। अतः उन्हें उभयपदी धातु कहा जाता है।

सेट, अनिट् वेट् धातुएं – कुछ धातुओं में प्रत्यय लगने से पूर्व इट् (इ) का आगाम होता है। ऐसे धातुओं को सेट् धातु कहते हैं। जैसे – **पठ् –** पठितः, **लिखितः** – लेखितुम् आदि।

जिन धातुओं में इट् का आगम नहीं होता, वे धातु अनिट् कहलाते हैं। जैसे –

कृ – कृतः, कर्त्ता। **गम् –** गतः, गन्ता आदि।

कुछ धातुएं ऐसी भी हैं जिनमें इट् विकल्प में होता है, इन्हें वेट धातु कहा जाता है।

लकार – क्रियापदों से विभिन्न कालों और आज्ञादि अर्थों की सूचक उपाय को लकार कहा गया है।

1.1.3 सन्धि

सन्धि की परिभाषा – दो वर्णों के परस्पर संयोग या मेल से उनमें कुछ विकार उत्पन्न हो जाता है। यही विकार सन्धि का कारण बनता है। ''वर्णानां परस्परं विकृतिमत् सन्धानं सन्धिः'' अर्थात् वर्णो का आपस में विकार सहित मिलना सन्धि है अर्थात् दो वर्णो की अत्यन्त समीपता के कारण उनमें जो परिवर्तन होता है उसे सन्धि कहते हैं।

यदि विकार (परिवर्तन) नहीं हुआ और वर्ण आपस में मिलें तो वह सन्धि नहीं होगी, वह वर्ण संयोग कहलायेगा। जैसे – नर + इन्द्रः। यहां अ + इ मिलकर 'ए' हो गये हैं और 'नरेन्द्रः' शब्द बन जाने से यहां सन्धि हुई है।

सन्धि में परिवर्तन के तीन रूप – सन्धि में जो परिवर्तन (विकार) होता है वह तीन प्रकार का होता है – 1. आदेश, 2. लोप, 3. आगम।

1 **आदेश –** जहां दो वर्णो या एक वर्ण की जगह नया वर्ण आ जाता है। जैसे – नर + इन्द्रः = नरेन्द्रः। यहां अ + इ की जगह पर 'ए' आदेश है। इसी प्रकार इति + आदि = इत्यादि में 'इ' की जगह 'य्' का आदेश हुआ है।

2 **लोप –** जहां से वर्णो में से एक लोप हो जाये। जैसे – देवाः + वदन्ति = देवा वदन्ति में विसर्ग का लोप हुआ है।

3 **आगम –** जहां वर्णो के बीच का एक नया वर्ण (आगम) आ जाता है। जैसे – शिव + छाया = शिवच्छाया में 'च' का आगम हुआ है।

नोट – सन्धि को अलग करना सन्धि–विच्छेद कहलाता है। जैसे – जगन्नाथः का सन्धि–विच्छेद होगा – जगत् + नाथः।

सन्धि की अनिवार्यता

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः

नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते।।

अर्थात् यह आवश्यक नहीं कि सर्वत्र सन्धि की जावे किन्तु निम्नलिखित तीन स्थानों पर सन्धि अवश्य करनी पड़ती है –

1 एक पद में सन्धि, जैसे – रौ + अणः = रावणः। बालक + इन = बालकेन।

2 धातु और उपसर्ग में सन्धि, जैसे – अधि + इते = अधीते। उप + एति = उपैति।

3 समास में सन्धि, जैसे – दैत्यानाम् अरिः – दैत्य + अरिः = दैत्यारिः। ज्ञानस्य + उदयः – ज्ञान + उदय = ज्ञानोदयः।

इन तीन स्थानों के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर सन्धि वक्ता या लेखक की इच्छा पर निर्भर है। वह सन्धि वैकल्पिक होगी। जैसे –

अनिच्छा में सन्धि का अभाव –

दशरथ आज्ञया रामः वनम् गतः।

इच्छा में सन्धि का भाव –

दशरथस्याज्ञया रामो वनं गतः।

सन्धियों के भेद

सन्धि के भेद का कारण भी विकार (परिवर्तन) ही है। यदि स्वर का विकार होता है तो स्वर सन्धि, व्यंजन का विकार होता है तो व्यंजन सन्धि और विसर्ग का विकार होता है तो विसर्ग सन्धि। इस प्रकार सन्धि मुख्यतः तीन प्रकार की होती है।

1 **स्वर सन्धि –** (अच् सन्धि अर्थात् स्वर + स्वर की सन्धि जैसे – विद्या + अर्थी = विद्यार्थी।

2 **व्यंजन सन्धि –** (हल् सन्धि) अर्थात् व्यंजन + व्यंजन या स्वर की सन्धि। जैसे – जगत् + नाथः = जगन्नाथः। जगत् + ईशः = जगदीशः।

3 **विसर्ग सन्धि –** विसर्ग + व्यंजन या स्वर की सन्धि जैसे – रामः + शेते = रामश्शेते। रामः + इच्छति = राम इच्छति।

1.2 इकाई के उद्देश्य

- शब्दरूपों को स्मरण कर वाक्य रचना में समर्थ होंगे;
- धातुरूपों का संस्कृत लेखन तथा संस्कृत सम्भाषण में प्रयोग कर सकेंगे;
- धातुरूपों की सहायता से अलग–अलग काल के अनुसार वाक्य रचना कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार की सन्धियों से अवगत हो सकेंगे;
- सन्धि अथवा सन्धिविच्छेद करने में समर्थ होंगे।

1.3 संस्कृत व्याकरणम्

1.3.1 शब्दरूप

राम

अकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम !	हे रामौ !	हे रामाः !

कवि (कवि)

अकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पंचमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	हे कवे !	हे कवी !	हे कवयः !

भानु (सूर्य)

उकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पंचमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो !	हे भानू !	हे भानवः !

पितृ (पिता)

ऋकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरो	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पंचमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः !	हे पितरौ !	हे पितरः !

कर्तृ (नपुंसकलिंग) (करने वाला)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्ता	कर्तृरौ	कर्तारः
द्वितीया	कर्तारम्	कर्तारौ	कर्तॄन्
तृतीया	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
चतुर्थी	कर्त्रे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
पंचमी	कर्तुः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
षष्ठी	कर्तुः	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्
सप्तमी	कर्तरि	कर्त्रोः	कर्तृषु
सम्बोधन	हे कर्तः	हे कर्तारौ	हे कर्तारः

अनुरूप शब्द धातृ (ब्रह्मा), धारण करने वाला

लता (बेला)

आकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्यः	लताभ्यः
पंचमी	लतायाः	लताभ्यः	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

मति (बुद्धि ज्ञान)

इकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पंचमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते !	हे मती !	हे मतयः !

नदी (नदी)

ईकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि !	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

वधू (बहू, दुल्हन, पुत्र वधु)

ऊकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वे	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पंचमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु !	हे वध्वौ !	हे वध्वः !

मातृ (माता)

ऋकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः !	हे मातरौ !	हे मातरः !

फल (फल)

अकारान्त (नपुंसकलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पंचमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल !	हे फले !	हे फलानि !

वारि (जल)

इकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पंचमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि – हे वारे !	हे वारिणी !	हे वारीणि !

मधु (मदिरा, शहद)

उकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पंचमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधो – हे मधु !	हे मधुनी !	हे मधूनि !

धेनु (गाय)

स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पंचमी	धेनोः, धेन्वाः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेनोः, धेन्वाः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेनौ, धेन्वाम्	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो !	हे धेनु !	हे धेनवः !

आत्मन् (आत्मा)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पंचमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन् !	हे आत्मानौ !	हे आत्मानः

दण्डिन् (दण्ड वाला)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दण्डि	दण्डिनी	दण्डीनिः
द्वितीया	दण्डि	दण्डिनी	दण्डीनि
तृतीया	दण्डिना	दण्डिभ्याम्	दण्डिभिः
चतुर्थी	दण्डिने	दण्डिभ्याम्	दण्डिभिः
पंचमी	दण्डिनः	दण्डिभ्याम्	दण्डिभ्यः
षष्ठी	दण्डिनः	दण्डिनोः	दण्डिनाम्
सप्तमी	दण्डिनि	दण्डिनोः	दण्डिषु
सम्बोधन	हे दण्डिन् !	हे दण्डिनी !	हे दण्डीनि !

वाच् (वाणी)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पंचमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक् !	हे वाचौ !	हे वाचः !

सरित् (नदी)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सरित्	सरितौ	सरितः
द्वितीया	सरितम्	सरितौ	सरितः
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
चतुर्थी	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पंचमी	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
षष्ठी	सरितः	सरितोः	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	सरितोः	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित् !	हे सरितौ !	हे सरितः !

संख्यावाची शब्द

एक (केवल एकवचन में)

विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पंचमी	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
षष्ठी	एकस्य	एकस्याः	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

द्वि (दो) (केवल द्विवचन में)

विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पंचमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयौः

त्रि (तीन) (केवल बहुवचन में)

विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पंचमी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रणाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	त्रिसृषु	त्रिषु

चतुर् (चार) (केवल बहुवचन में)

विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पंचमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्, चतुर्ण्णम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्, चतुर्ण्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

पंचन् (पांच) (केवल बहुवचन के तीनों लिंगों में समान)

विभक्ति	
प्रथमा	पंच
द्वितीया	पंच
तृतीया	पंचभिः
चतुर्थी	पंचभ्यः
पंचमी	पंचभ्यः
षष्ठी	पंचानाम्
सप्तमी	पंचसु

षष् (छः) केवल बहुवचन के (तीनों लिंगों में समान)

विभक्ति	
प्रथमा	षट् – ड्
द्वितीया	षट् – ड्
तृतीया	षड्भिः
चतुर्थी	षड्भ्यः
पंचमी	षड्भ्यः
षष्ठी	षण्णाम्
सप्तमी	षट्षु

अष्ठन् (आठ) (केवल बहुवचन के तीनों लिंगों में समान)

विभक्ति	
प्रथमा	अष्ट–अष्टौ
द्वितीया	अष्ट–अष्टौ
तृतीया	अष्टभिः–अष्टाभिः
चतुर्थी	अष्टभ्यः–अष्टाभ्यः
पंचमी	अष्टभ्यः–अष्टाभ्यः
षष्ठी	अष्टानाम्
सप्तमी	अष्टसु–अष्टासु

नवन् (नौ) (केवल बहुवचन के तीनों लिंगों में समान)

विभक्ति	
प्रथमा	नव
द्वितीया	नव
तृतीया	नवभिः
चतुर्थी	नवभ्यः
पंचमी	नवभ्यः
षष्ठी	नवानाम्
सप्तमी	नवसु

दशम् (दस) (केवल बहुवचन के तीनों लिंगों में समान)

विभक्ति	
प्रथमा	दश
द्वितीया	दश
तृतीया	दशभिः
चतुर्थी	दशभ्यः
पंचमी	दशभ्यः
षष्ठी	दशानाम्
सप्तमी	दशसु

सर्वनाम शब्द

वे शब्द जो किसी संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हैं, सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम शब्दों के सम्बोधन नहीं होते। अस्मद् तथा युष्मद् के रूप तीनों लिंगों में एक समान होते हैं। शेष सर्वनाम शब्दों के तीनों लिंगों में भिन्न रूप होते हैं।

स्वरान्त

1. सर्व (पुल्लिंग) सब

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पंचमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

सर्व (स्त्रीलिंग)

विभक्त	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पंचमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वेसाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

सर्व (नपुंसकलिंग) सब

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

(शेष पुंल्लिंगवत्)

व्यंजनान्त

इदम् (पुल्लिंग) यह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमस्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

इदम् (स्त्रीलिंग) यह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पंचमी	अस्साः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

इदम् (नपुंसकलिंग) यह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पुरुष	इदम्	इमे	इमानि
द्वि० पुरुष	इमम्	इमे	इमानि
	(शेष पुल्लिंगवत)		

तद् (पुल्लिंग) वह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तद् (स्त्रीलिंग) वह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तद् (नपुंसकलिंग) वह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

नोट – शेष पुंल्लिंग की भान्ति ही होंगे।

एतद् (पुल्लिंग) यह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पंचमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

एतद् (स्त्रीलिंग) यह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पंचमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

एतद् (नपुंसकलिंग) यह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्	एते	एतानि
	(शेष पुल्लिंगवत्)		

युष्मद् (तुम)

इसके रूप तीनों लिंगों में एक समान होते हैं।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अस्मद् (हम)

इसके रूप तीनों लिंगों में एक समान होते हैं।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

यत् (जो) पुंल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पंचमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

यत्, स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पंचमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

यत्, नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

नोट – शेष रूप पुल्लिंग के समान बनेंगे।

किम् (क्या) पुल्लिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम्, स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

किम्, नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

नोट – शेष रूप पुल्लिंग के समान बनेंगे।

1.3.2 धातुरूप

भ्वादि गण

इस गण का विकरण शप् (अ) है। यहां पाठ्यक्रम में निर्धारित धातु दिये जा रहे हैं।

1. परस्पैपदी धातुएं

भू (होना)

लट् (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लङ् (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म० पु०	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ० पु०	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लोट् (आज्ञार्थ)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भवतु, भवतात्	भवताम्	भवन्तु
म० पु०	भव, भवतात्	भवतम्	भवत
उ० पु०	भवनि	भवाव	भवाम

लृट् (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

विधिलिङ् (प्रतिवर्तनार्थ)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
म० पु०	भवेः	भवेतम्	भवेत
उ० पु०	भवेयम्	भवेव	भवेम

गम्–गच्छ (जाना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
म० पु०	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उ० पु०	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लङ् (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म० पु०	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उ० पु०	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
म० पु०	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उ० पु०	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गामिष्यति	गमिष्यतः	गामिष्यन्ति
म० पु०	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उ० पु०	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
म० पु०	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उ० पु०	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

पठ् (पढ़ना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठति	पठतः	पठन्ति
म० पु०	पठसि	पठथः	पठथः
उ० पु०	पठामि	पठावः	पठामः

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म० पु०	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ० पु०	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठतु	पठताम्	पठन्तु
म० पु०	पठ	पठतम्	पठत
उ० पु०	पठानि	पठाव	पठाम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
म० पु०	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ० पु०	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
म० पु०	पठेः	पठेतम्	पठेत
उ० पु०	पठेयम्	पठेव	पठेम

हस् (हंसना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसति	हसतः	हसन्ति
म० पु०	हससि	हसथः	हसथ
उ० पु०	हसासि	हसावः	हसामः

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
म० पु०	अहसः	अहसतम्	अहसत
उ० पु०	अहसम्	अहसाव	अहसाम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
म० पु०	हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
उ० पु०	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसतु	हसताम्	हसन्तु
म० पु०	हस	हसतम्	हसत
उ० पु०	हसानि	हसाव	हसाम

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसेत्	हसेताम्	हसेयुः
म० पु०	हसेः	हसेतम्	हसेत
उ० पु०	हसेयम्	हसेव	हसेम

अस् (होना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अस्ति	स्तः	सन्ति
म० पु०	टसि	स्थः	स्थ
उ० पु०	अस्मि	स्वः	स्मः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
म० पु०	एधि	स्तम्	स्त
उ० पु०	असानि	असाव	असाम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म० पु०	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ० पु०	आसम्	आस्व	आस्म

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्यात्	स्याताम्	स्युः
म० पु०	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ० पु०	स्याम्	स्याव	स्याम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

हन् (मारना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म० पु०	हंसि	हथः	हथ
उ० पु०	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
म० पु०	जहि	हतम्	हत
उ० पु०	हनानि	हनाव	हनाम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म० पु०	अहन्	अहतम्	अहत
उ० पु०	अहनम्	अहन्व	अहन्म

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
म० पु०	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उ० पु०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
म० पु०	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उ० पु०	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

नम् (झुकना, प्रणाम करना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नमति	नमतः	नमन्ति
म० पु०	नमसि	नमथः	नमथ
उ० पु०	नमामि	नमावः	नमामः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नमतु	नमताम्	नमन्तु
म० पु०	नम	नमतम्	नमत
उ० पु०	नमानि	नमाव	नमाम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
म० पु०	अनमः	अनमतम्	अनमत
उ० पु०	अनमम्	अनमाव	अनमाम

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
म० पु०	नमेः	नमेतम्	नमेत
उ० पु०	नमेयम्	नमेव	नमेम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
म० पु०	नंस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ
उ० पु०	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

क्रुध् (क्रोध करना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रुध्यति	क्रध्यतः	क्रुध्यति
म० पु०	क्रध्यसि	क्रव्यथः	क्रध्यथ
उ० पु०	क्रुध्यामि	क्रुध्यावः	क्रुध्यामः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रध्यतु	क्रुध्यताम्	क्रध्यन्तु
म० पु०	क्रुध्य	क्रध्यतम्	क्रुध्यत
उ० पु०	क्रुध्यानि	क्रुध्याव	क्रुध्याम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अक्रुध्यत्	अक्रुध्यताम्	अक्रुध्यन्
म० पु०	अक्रध्यः	अक्रुध्यम्	अक्रुध्यत
उ० पु०	अक्रुध्यम्	अक्रुध्याव	अक्रुध्याम

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रुध्येत्	क्रुध्येताम्	क्रुध्ययुः
म० पु०	क्रध्येः	क्रुध्येतम्	क्रुध्येत
उ० पु०	क्रुध्येयम्	क्रध्येव	क्रध्येम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रोत्स्यति	क्रोत्स्यतः	क्रोत्स्यन्ति
म० पु०	क्रोत्स्यसि	क्रोत्स्यथः	क्रोत्स्यथ
उ० पु०	क्रोत्स्यामि	क्रोत्स्यावः	क्रोत्स्यामः

नश् (नष्ट होना)

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
म० पु०	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उ० पु०	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
म० पु०	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उ० पु०	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
म० पु०	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
उ० पु०	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
म० पु०	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उ० पु०	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
म० पु०	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
उ० पु०	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः

नृत् (नाचना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
म० पु०	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उ० पु०	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
म० पु०	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उ० पु०	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
म० पु०	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उ० पु०	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नृत्येत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
म० पु०	नृत्येः	नृत्येतम्	अनृत्यत
उ० पु०	नृत्यानि	नृत्याव	अनृत्याम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नर्तिष्यति	नृत्येताम्	नृत्येयुः
म० पु०	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उ० पु०	नृत्येयम्	नृत्येव	अनृत्याम

अद् (खाना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
म० पु०	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उ० पु०	अद्मि	अद्वः	अद्मः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
म० पु०	अद्धि	अत्तम्	अत्त
उ० पु०	अदानि	अदाव	अदाम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आदत्	आत्ताम्	आदन्
म० पु०	आदः	आत्तम्	आत्त
उ० पु०	आदम्	आदव्	आद्म

विधिलिंङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
म० पु०	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उ० पु०	अद्यान्	अद्याव	अद्याम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
म० पु०	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
उ० पु०	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

इष् (चाहना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
म० पु०	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उ० पु०	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
म० पु०	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उ० पु०	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
म० पु०	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उ० पु०	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
म० पु०	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उ० पु०	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एषियति	एषियतः	एषिष्यन्ति
म० पु०	एषियसि	एषियथः	एषियथ
उ० पु०	एषियामि	एषियावः	एषियामः

पृच्छ् (पूछना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
म० पु०	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उ० पु०	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
म० पु०	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उ० पु०	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
म० पु०	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उ० पु०	अपृच्छेम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयु
म० पु०	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उ० पु०	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
म० पु०	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उ० पु०	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

चिन्त् (सोचना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिन्तयति	चिन्तयतः	चिन्तयन्ति
म० पु०	चिन्तयसि	चिन्तयथः	चिन्तयथ
उ० पु०	चिन्तयामि	चिन्तयावः	चिन्तयामः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिन्तयतु	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु
म० पु०	चिन्तय	चिन्तयतम्	चिन्तयत
उ० पु०	चिन्तयानि	चिन्तयाव	चिन्तयाम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्
म० पु०	अचिन्तयः	अचिन्तयतम्	अचिन्तयत
उ० पु०	अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिन्तयेत्	चिन्तयेताम्	चिन्तयेयुः
म० पु०	चिन्तयेः	चिन्तयेतम्	चिन्तयेत
उ० पु०	चिन्तयेयम्	चिन्तयेव	चिन्तयेम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यतः	चिन्तयिष्यन्ति
म० पु०	चिन्तयिष्यसि	चिन्तयिष्यथः	चिन्तयिष्यथ
उ० पु०	चिन्तयिष्यामि	चिन्तयिष्यावः	चिन्तयिष्यामः

आत्मनेपदी धातुएँ

सेव् (सेवा करना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
म० पु०	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उ० पु०	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
म० पु०	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उ० पु०	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
म० पु०	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उ० पु०	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
म० पु०	सेवेथाः	सेवेवहि	सेवेमहि
उ० पु०	सेवेय	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सेवष्यिते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
म० पु०	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उ० पु०	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लभ् (पाना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लभते	लभेते	लभन्ते
म० पु०	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ० पु०	लभे	लभावहे	लभामहे

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म० पु०	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ० पु०	लभै	लभावहै	लभामहै

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
म० पु०	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ० पु०	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म० पु०	लेभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ० पु०	लभेय	लभवहि	लभेमहि

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म० पु०	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ० पु०	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

रुच् (शोभा – अच्छा लगना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रोचते	रोचेते	रोचन्ते
म० पु०	रोचसे	रोचेथे	रोचध्वे
उ० पु०	रोचे	रोचावहे	रोचामहे

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रोचताम्	रोचेताम्	रोचन्ताम्
म० पु०	रोचस्व	रोचेथाम्	रोचध्वम्
उ० पु०	रोचै	रोचावहै	रोचामहै

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अरोचत	अरोचेताम्	अरोचन्त
म० पु०	अरोचथाः	अरोचेथाम्	अरोचध्यम्
उ० पु०	अरोचे	अरोचावहि	टरोचामहि

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रोचेत	रोचेयाताम्	रोचेरन्
म० पु०	रोचेथाः	रोचेयाथाम्	रोचेध्वम्
उ० पु०	रोचेय	रोचेवहि	रोचेमहि

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रोचिष्यते	रोचिष्येते	रोचिष्यन्ते
म० पु०	रोचिष्यसे	रोचिष्येथे	रोचिष्यध्वे
उ० पु०	रोचिष्ये	रोचिष्यावहे	रोचिष्यामहे

मुद् (प्रसन्न होना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	मोदते	मोदेते	मोदन्ते
म० पु०	मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे
उ० पु०	मोदे	मोदावहे	मोदामहे

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्
म० पु०	मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्
उ० पु०	मोदै	मोदावहै	मोदामहै

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अमोदत	अमोतेताम्	अमोदन्त
म० पु०	अमोदथाः	आमेदेथाम्	अमोदध्वम्
उ० पु०	अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्
म० पु०	मोदेथाः	मोदेयाथाम्	मोदध्वम्
उ० पु०	मोदेय	मोदेवहि	मोदेमहि

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते
म० पु०	मोदिष्यसे	मोदिष्येथे	मोदिष्यध्वे
उ० पु०	मोदिष्ये	मोदिष्यावहे	मोदिष्यामहे

याच् (मांगना)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	याचते	याचेते	याचन्ते
म० पु०	याचसे	याचेथे	याचध्वे
उ० पु०	याचे	याचावहे	याचामहे

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	याचाताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
म० पु०	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
उ० पु०	याचै	याचावहै	याचामहै

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
म० पु०	अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उ० पु०	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
म० पु०	याचेथाः	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
उ० पु०	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
म० पु०	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उ० पु०	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

उभयपदी धातुएँ

कृ (करना)

लट्

परस्मैपद

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म० पु०	करोसि	कुरुथः	कुरुथ
उ० पु०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म० पु०	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उ० पु०	करवाणि	करवाव	करवाम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म० पु०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ० पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
म० पु०	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ० पु०	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
म० पु०	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ० पु०	करिष्यमि	करिष्यावः	करिष्यामः

आत्मनेपद

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
म० पु०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ० पु०	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
म० पु०	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उ० पु०	करवै	करवावहै	करवामहै

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुवत
म० पु०	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ० पु०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
म० पु०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उ० पु०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
म० पु०	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उ० पु०	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

नी (ले जाना)

परस्मैपद

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नयति	नयतः	नयन्ति
म० पु०	नयसि	नयथः	नयथ
उ० पु०	नयमि	नयावः	नयामः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नयतु	नयताम्	नयन्तु
म० पु०	नय	नयतम्	नयत
उ० पु०	नयानि	नयाव	नयाम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
म० पु०	अनयः	अनयतम्	अनयत
उ० पु०	अनयम्	अनयाव	अनयाम

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नयेत्	नेयताम्	नेययुः
म० पु०	नयेः	नयेतम्	नयेत
उ० पु०	नयेयम्	नयेव	नयेम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
म० पु०	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उ० पु०	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

आत्मनेपद

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नयते	नयेते	नयन्ते
म० पु०	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ० पु०	नये	नयावहे	नयामहे

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
म० पु०	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उ० पु०	नयै	नयावहै	नयामहै

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
म० पु०	अनयथाः	अनयथाम्	अनयध्वम्
उ० पु०	अनये	अनयावहि	अनयामहि

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
म० पु०	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उ० पु०	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
म० पु०	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उ० पु०	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

हृ (हरना)

परस्मैपद

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरति	हरतः	हरिन्ति
म० पु०	हरसि	हरथः	हरथ
उ० पु०	हरामि	हरावः	हरामः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरतु	हरताम्	हरन्तु
म० पु०	हर	हरतम्	हरत
उ० पु०	हराणि	हराव	हराम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अहरत्	अहरताम्	अहरन्
म० पु०	अहरः	अहरतम्	अहरत
उ० पु०	अहरम्	अहराव	अहराम

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरेत्	हरेताम्	हरेयुः
म० पु०	हरेः	हरेतम्	हरेत
उ० पु०	हरेयम्	हरेव	ळरेम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति
म० पु०	हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यथ
उ० पु०	हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः

आत्मनेपद

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरते	हरेते	हरन्ते
म० पु०	हरसे	हरेथे	हरध्वे
उ० पु०	हरे	हरावहे	हरामहे

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
म० पु०	हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
उ० पु०	हरै	हरावहै	हरामहै

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अहरत	अहरेताम्	अरहन्त
म० पु०	अहरथाः	अहरथाम्	अहरध्वम्
उ० पु०	अहरे	अहरावहि	अहरामहि

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्
म० पु०	हरेथाः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
उ० पु०	हरेय	हरेवहि	हरेमहि

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते
म० पु०	हरिष्यसे	हरिष्येथे	हरिष्यध्वे
उ० पु०	हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे

भज् (सेवा करना, भजन करना)

परस्मैपद

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भजति	भजतः	भजन्ति
म० पु०	भजसि	भजथः	भजथ
उ० पु०	भजामि	भजावः	भजामः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भजतु	भजताम्	भजन्तु
म० पु०	भज	भजतम्	भजत
उ० पु०	भजानि	भजाव	भजाम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अभजत्	अभजताम्	अभजन्
म० पु०	अभजः	अभजतम्	अभजत
उ० पु०	अभजम्	अभजाव	अभजाम

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भजेत्	भजेताम्	भजेयुः
म० पु०	भजेः	भजेतम्	भजेत
उ० पु०	भजेयम्	भजेव	भजेम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भक्ष्यति	भक्ष्यतः	भक्ष्यन्ति
म० पु०	भक्ष्यसि	भक्ष्यथः	भक्ष्यथ
उ० पु०	भक्ष्यामि	भक्ष्यावः	भक्ष्यामः

आत्मनेपद

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भजते	भजेते	भजन्ते
म० पु०	भजसे	भजेथे	भजध्वे
उ० पु०	भजे	भजावहे	भजामहे

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भजताम्	भजेताम्	भजन्ताम्
म० पु०	भजस्व	भजेथाम्	भजध्वम्
उ० पु०	भजै	भजावहै	भजामहै

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अभजत	अभजताम्	अभजन्त
म० पु०	अभजथाः	अभजेथाम्	अभजध्वम्
उ० पु०	अभजे	अभजावहि	अभजामहि

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भजेत	भजेयाताम्	भजेरन्
म० पु०	भजेथाः	भजेयाथाम्	भजेध्वम्
उ० पु०	भजेय	भजेवहि	भजेमहि

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भक्ष्यते	भक्ष्येते	भक्ष्यन्ते
म० पु०	भक्ष्यसे	भक्ष्येथे	भक्ष्यध्वे
उ० पु०	भक्ष्ये	भक्ष्यावहे	भक्ष्यामहे

पच् (पकाना)

परस्मैपद

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पचति	पचतः	पचन्ति
म० पु०	पचसि	पचथः	पचथ
उ० पु०	पचामि	पचावः	पचामः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पचतु	पचताम्	पचन्तु
म० पु०	पच	पचतम्	पचत
उ० पु०	पचानि	पचाव	पचाम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
म० पु०	अपचः	अपचतम्	अपचत
उ० पु०	अपचम्	अपचाव	अपचाम

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
म० पु०	पचेः	पचेतम्	पचेत
उ० पु०	पचेयम्	पचेव	प्चेम

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
म० पु०	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उ० पु०	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

आत्मनेपदी

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पचते	पचेते	पचन्ते
म० पु०	पचसे	पचेथे	पचध्वे
उ० पु०	पचे	पचावहे	पचामहे

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पचताम्	पचेताम्	पचन्ताम्
म० पु०	पचस्व	पचेथाम्	पचध्वम्
उ० पु०	पचै	पचावहै	पचामहै

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपचत	अपचेताम्	अपचन्त
म० पु०	अपचथाः	अपचेथाम्	अपचध्वम्
उ० पु०	अपचे	अपचावहि	टपचामहि

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पचेत	पचेयाताम्	पचेरन्
म० पु०	पचेथाः	पचेयाथाम्	पचेध्यम्
उ० पु०	पचेय	पचेवहि	पचेमहि

लृट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पक्ष्यते	पक्ष्येते	पक्ष्यन्ते
म० पु०	पक्ष्यसे	पक्ष्येथे	पक्ष्यध्वे
उ० पु०	पक्ष्ये	पक्ष्यावहे	पक्ष्यामहे

1.3.3 सन्धि प्रकरण

1. स्वरसन्धि

लक्षण – दो स्वरों के अत्यन्त समीप होने पर उनमें जो परिवर्तन होता है, उसे 'स्वर सन्धि' कहते हैं।

भेद – स्वरसन्धि के प्रमुख भेद निम्नलिखित (आठ) हैं – 1. दीर्घसन्धि, 2. गुणसन्धि, 3. वृद्धिसन्धि, 4. यण्सन्धि, 5. अयादिसन्धि, 6. पूर्वरूपसन्धि, 7. पररूपसन्धि, 8. प्रकृतिभाव। इनमें प्रथम पांच मूल सन्धियां हैं। शेष तीन अपवाद के रूप में हैं।

1. दीर्घसन्धि (आ, ई, ऊ, ऋ)

नियम – अकः सवर्णे दीर्घः – ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के बाद यदि क्रम से ह्रस्व या दीर्घ वही स्वर (अ, इ, उ, ऋ) आये तो दोनों मिलकर एक दीर्घ स्वर हो जाते हैं।

उदाहरण –

(i) आ = अ / आ + अ / आ

परमः + अर्थः = परमार्थः	हिम + अचलः = हिमाचलः
मुर + अरिः = मुरारिः	शश + अंकः = शशांकः
दैत्य + अरिः = दैत्यारिः	तत्र + आगच्छत् = तत्रागच्छत्
देव + आलयः = देवालयः	देव + आनन्दः देवानन्दः
हिम + आलयः = हिमालयः	परम + आनन्दः = परमानन्दः
विद्या + अभ्यासः = विद्याभ्यासः	विद्या + अर्थीः = विद्यार्थी
महा + असुरः = महासुरः	विद्या + अभ्यासः = विद्याभ्यासः
विद्या + आलयः = विद्यालयः	विधवा + आश्रमः = विधवाश्रमः
रमा + आगच्छत् = रामागच्छत्	दया + आनन्दः = दयानन्दः

(ii) ई = इ / ई + इ / ई

गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः	हरि +इच्छा = हरिच्छा
कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः	रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः
गिरि + ईशः = गिरीशः	कवि + ईश्वरः = कवीश्वरः
मही + इन्द्रः = महीन्द्रः	सुधी + इन्द्र = सुधीन्द्रः
श्री + ईशः = श्रीशः	लक्ष्मी + ईश्वरः = लक्ष्मीश्वरः

(iii) ऊ = उ / ऊ + उ / ऊ

भानु + उदयः = भानूदयः　　सु + उक्ति = सूक्तिः

गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः　　लघु + उत्सवः = लघूत्सवः

लघु + ऊर्मिः = उघूर्मि :　　भानु + ऊर्जा = भानूर्जा

भू + ऊर्ध्वम् = भूर्ध्वम्　　वधू + उवाच = वधूवाच

(iv) ॠ = ऋ / ॠ + ऋ / ॠ

मातृ + ऋणम् = मातॄणम्　　पितृ + ऋद्धिः = पितॄद्धिः

पितृ + ऋणम् = पितॄणम्　　होतृ + ऋकारः = होतॄकारः

नोट – (1) दीर्घ 'ऋ' के अधिक उदाहरण नहीं मिलते।

(2) ऋ का सवर्ण 'ऌ' भी है। अतः ऌ का भी दीर्घ ॡ ही होता है।

2. गुणसन्धि (ए, ओ, अर्, अल्)

नियम – 'आद्गुणः' यदि अ या आ के बाद इ या ई हो तो दोनों मिलकर 'ए'। उ या ऊ हो तो दोनों मिलकर 'ओ', ऋ हो तो दोनों मिलकर 'अर्' और ऌ हो तो दोनों मिल कर 'अल्' हो जाते हैं।

उदाहरण –

ए – नर + इन्द्रः = नरेन्द्रः　　सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः

गण + ईशः = गणेशः　　लोक + ईशः = लोकेशः

महा + इन्द्रः = महेन्द्रः　　धारा + इवः = धारेव

उमा + ईशः = उमेशः　　रमा + ईशः = रमेशः

ओ – हित + उपदेशः = हितोपदेशः　　सूर्य + उदयः = सूर्योदयः

चन्द्र + उदयः = चन्द्रोदयः　　नर + उत्तमः = नरोत्तमः

एक + उनविंशतिः = एकोनविंशतिः　　गंगा + ऊर्मिः = गंगोर्मिः

अ (अर) – सप्त + ऋषिः = सप्तर्षिः　　देव + ऋषिः = देवर्षिः

ब्रह्म + ऋषिः = ब्रह्मर्षिः　　कृष्ण + ऋद्धिः = कृष्णर्द्धिः

महा + ऋषिः = महर्षिः　　धन + ऋद्धिः = धनर्द्धिः

अ (अल्) – तव + ऌकारः = तवल्कारः　　माला + ऌकारः = मालल्कारः

अपवाद – उपर्युक्त नियमों के होने पर भी यहां गुणसन्धि न होकर वृद्धि सन्धि होगी। जैसे –

स्व + ईरम् = स्वैरम्: अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी

प्र + ऊढः = प्रौढः दुःख + ऋतः = दुःखार्तः

प्र + ऋणम् = प्रार्णम् दश + ऋणः = दशार्णः

प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छतिः स्व + ईरिणीः = स्वैरिणीः

3. वृद्धिसन्धि (ऐ, औ, आर्)

नियम – वृद्धिरेचि – अ या आ के बाद ए या ऐ हों तो दोनों मिलकर ऐ। ओ या औ हों तो औ तथा 'ऋ' हो तो 'आर्' हो जाते हैं।

उदाहरण –

(i) ऐ – तव + एव = तवैव अथ + एकदा = अथैकदा

एक + एकम् = एकैकम् मत + एक्यम् = मतैक्यम्

मत + एकता = मतैकता ऐव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्

सदा + एव = सदैव महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्

(ii) औ – जल + ओधः = जलौधः वन + औषधिः = वनौषधिः

परम + औषधिः = परमौषधिः गंगा + ओघः = गंगौघः

दिव्य + औषधम् = दिव्यौषधम् महा + औत्सुक्यम् = महौत्सुक्यम्

ब्रह्म + औपनिषद् = ब्रह्मौपनिषद् महा + औषधम् = महौषधम्

नोट – समास में ओष्ठ शब्द आने पर विकल्प से वृद्धि होती है। जैसे –

बिम्ब + ओष्ठः = बिम्बौष्ठः (बिम्बोष्ठः) अधर + ओष्ठः = अधरौष्ठः (अधरोष्ठ)

दन्त + ओष्ठः = दन्तौष्ठः (दन्तोष्ठः)

(iii) आर् – सुख + ऋतः = सुखार्तः कष्ट + ऋतः = कष्टार्तः

पिपासा + ऋतः = पिपासार्तः बुभुक्षा + ऋतः = बुभुक्षार्तः

प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति दश + ऋणः = दशार्णः

अपवाद – प्र + एजते = प्रेजते शिवाय + एहि = शिवेहि

उप + ओषति = उपोषति शिवाय + ओम् = शिवायोम्

4. यण्सन्धि (य्, व्, र्, ल्)

नियम – इको यणचि – ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ के बाद असमान (असवर्ण) स्वर के आने पर इ को य्, उ को 'व्' 'ऋ' को 'र्' तथा 'ऌ' को 'ल्' हो जाता है।

उदाहरण –

(i) य – इ / ई + असमान स्वर

यदि + अपि = यद्यपि	सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः
इति + आदिः = इत्यादिः	देवी + अनुग्रह = देव्युग्रहः
प्रति + उपकारः = प्रत्युकारः	नदी + एव = नद्येव
इति + उवाच = इत्युवाच	गोपी + एषा = गोप्येषा
नि + ऊनः = न्यूनः	एहि + एहि = एह्येहि
नदी + अत्र = नद्यत्र	तादृशी + उक्तिः = तादृश्युक्तिः

(ii) व – उ / ऊ + असमान स्वर

अनु + अयः = अन्वयः	अनु + एषणम् = अन्वेषणम्
मधु + अरिः = मध्वरिः	भू + आदिः = भ्वादिः
सु + आगतम् = स्वागतम्	वधू + आगमनम् = वध्वागमनम्
वधू + अत्र = वध्वत्र	गुरु + आज्ञा = गुर्वाज्ञा

(iii) र् – ऋ / ॠ + असमान स्वर

धातृ + अंशः = धात्रंशः	कर्तृ + इच्छा = कर्त्रिच्छा
पितृ + आदेशः = पित्रादेशः	भातृ + उपदेश = भ्रात्रुपदेशः
भ्रातृ + इच्छा = भ्रात्रिच्छा	धातृ + ईश्वर्यम् = धात्रैश्वर्यम्
मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा	

नोट – दीर्घ ॠ के उदाहरण नहीं मिलते।

(iv) ल् – ऌ + असमान स्वर

ऌ + आकृतिः = लाकृतिः	ऌ + लाकारः = लाकारः

5. अयादिसन्धि (अय्, अव्, आय्, आव्)

नियम – एचोऽयवायावः – ए, ओ, ऐ, औ (एच्) के स्थान में क्रम से 'अय्', 'अव्', 'आय्', 'आव्' आदेश हो जाते हैं यदि बाद में कोई स्वर रहे।

उदाहरण –

(i) अय् – ए + स्वर

ने + अनम् = नयनम्	शे + अनम् = शयनम्
हरे + ए = हरये	ऋषि + ए = ऋषये
मुने + ए = मुनये	ए + अनम् = अयनम्

(ii) अव् – औ + स्वर

भो + अवनम् = भवनम्　　साधो + ए = साधवे

भानो + ए = भानवे　　पो + अनम् = पवनम्

भो + अन्ति = भवन्ति　　गुरो + इह = गुरविह

(iii) आय् – ऐ + स्वर

नै + अकः = नायक　　गै + अकः = गायकः

परिचै + अकः = परिचायकः　　दै + अकः = दायकः

(iv) आव् – औ + स्वर

पौ + अकः = पावकः　　रौ + अणः = रावणः

भौ + उक = भावुकः　　बालकौ + आगतौ = बालकावागतौ

नौ + इकः = नाविकः　　नौ + आ = नावा

तौ + आगच्छतः = तावागच्छतः　　भानौ + इह = भानाविह

विशेष – यदि ओ या औ के बाद यकार वाला कोई प्रत्यय हो तो भी ओ का 'अव्' और औ का 'आव्' होता है। **(वान्तोयि प्रत्यये)** जैसे –

गो + यम् = गव्यम्　　नौ + यम् = नाव्यम्

6. पूर्वरूपसन्धि

नियम – एङ पदान्तादति – ए, ओ (एङ्) यदि पद के अन्त में और उसके बाद ह्रस्व अ (अत्) हो तो दोनों मिलकर पूर्वरूप अर्थात् 'ए / ओ' हो जाते हैं। यदि सन्धि अवग्रह चिह्न के (ऽ) द्वारा सूचित होती है।

उदाहरण –

देवे + अपि = देवेऽपि　　विष्णो + अत्र = विष्णोऽत्र

ते + अत्र = तेऽत्र　　सखे + अर्पय = सखेऽर्पय

हरे + अव = हरेऽव　　प्रभो + अनुगृहण = प्रभोऽनुगृहाण

सेवन्ते + अमी = सेवन्तेऽमी　　ते + अब्रुवन् = तेऽब्रुवन्

7. पररूपसन्धि

नियम – एङ पररूपम् – अकारान्त उपसर्ग के बाद यदि ए, ओ (एङ्) से प्रारम्भ होने वाला धातु हो तो दोनों मिलकर पररूप अर्थात् 'ए / ओ' हो जाते हैं।

प्र + एजते = प्रेजते　　प्र + एषयति = प्रेषयति

उप + ओषति = उपोषति　　प्र + ओषति = प्रोषति

अपवाद –

अव + एति = अवैति　　उप + एधते = उपैधतें

8. प्रकृतिभावसन्धि

प्रकृतिभाव का अर्थ है अपने मूलरूप में बने रहना अर्थात् सन्धि के कारण किसी प्रकार का विकार (परिवर्तन) न होना।

नियम – (क) ईदूदे द्विवचनं प्रगृह्यम् – जिन द्विवचन शब्दों के अन्त में ई, ऊ और ए आते हों उनकी प्रगृह्य संज्ञा होने से प्रकृतिभाव सन्धि होती हैं अर्थात् वहां सन्धि नहीं होती।

उदाहरण –

ईकारान्त – मुनी + इमौ = मुनी इमौ हरी + एतौ = हरी एतौ

कवी + आगतौ = कवी आगतौ

ऊकारान्त – विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ भानू + अत्र = भानू अत्र

साधू + ईशं स्मरतः = साधू ईशं स्मरतः गंगे + अमू = गंगे अमू

एकारान्त – लते + एते = लते एते

बालिके + आगच्छतः = बालिके आगच्छतः

(ख) अदसो मात् – अदस् शब्द से बने रूपों में 'म्' के बाद ई या ऊ आने पर अर्थात् अमी और अमू की प्रकृतिभाव सन्धि होती है।

उदाहरण –

अमी + ईशाः = अमी ईशाः अमू + आगच्छतः = अमू आगच्छतः

(ग) ओत् – ओकोरान्त निपात शब्द में भी प्रकृतिभाव होता है।

उदाहरण –

अहो + अनिष्टम् = अहो अनिष्टम्	यहां पूर्वरूपसन्धि नहीं हुई।
अहो + ईशाः = अहो ईशाः	यहां अयादिसन्धि नहीं हुई।
अहो + अनर्थः = अहो अनर्थः	यहां पूर्वरूप–सन्धि नहीं हुई।

(घ) दूरात् हूते च – दूर से बोलने पर अर्थात् प्लुत अक्षर के उच्चारण में भी प्रकृतिभाव होता है।

उदाहरण –

आगच्छ राम३ अत्र तिष्ठावः	यहां दीर्घ सन्धि नहीं हुई।

अभ्यासार्थ प्रश्न

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1 सन्धि किन–किन स्थानों पर अनिवार्य है ?

2 स्वर सन्धि की परिभाषा सोदाहरण स्पष्ट करें।

3 यण्सन्धि और वृद्धिसन्धि के नियम लिखकर दो –दो उदाहरण दीजिए।

4 सन्धि विच्छेद करें –

इत्युक्त्वा	अत्याचारः
महाशयः	अद्यैव
कवीन्द्रः	महौषधिः
अद्यापि	मात्राज्ञा
हिमालयः	सुखार्तः
वार्तालापः	भवनम्
विधूदयः	भावुकः
मातृणम्	अन्वयः
विद्यार्थी	वनेऽपि
गिरीशः	हितोपदेशः
गणेशः	कवी एतौ
महेन्द्रः	अत्यावश्यकः
गुरूपदेशः	रात्रावागतः
वारितोदकम्	चयनम्
नरेशः	मुनेऽत्र
हितोपदेशः	तथैव
राजर्षिः	वनौषधिः
पूर्णेन्दुः	तावूचतुः
गुणौघः	पुरुषर्षभम्
यद्यत्र	प्रत्येकम्
पुरुषोत्तमः	महोपदेशकः
पावकः	अभ्युदयः
शुभागमनम्	महर्षिः

5 निम्नलिखित में सन्धि कीजिए –

शिक्षा + अर्थी	इति + उवाच
अभि + इष्टः	नील + उत्पलम्
रजनी + ईशः	वार्ता + आलापः
महा + आशयः	वर्षा + ऋतुः
मातृ + ऋणम्	सदा + एव
सूर्य + उदयः	भो + अति
भानो + ए	जे + अति
प्र + ऊढः	ने + अति
देव + ऋषिः	प्र + एहि
ग्रीष्म + ऋतुः	तेषु + एव

पितृ + इच्छा	हरे + उदयः
लते + एते	अभि + उदयः
अमी + अश्वाः	पितृ + अर्थम्
उप + एधते	तौ + अपि
पिपासा + ऋतः	असौ + अब्रवीत्
तव + लृकारः	शक + अन्धुः
वसन + ऋणम्	अक्ष + ऊहिणी
अमी + अजाः	मत + ऐक्यम्

2. व्यंजनसन्धि (हल्–सन्धि)

लक्षण – जहां किसी व्यंजन के किसी परवर्ती स्वर या व्यंजन के साथ मिलने पर परिवर्तन (विकार) हो, उसे व्यंजन–सन्धि कहते हैं।

यह विकार सामान्य रूप से पहले वर्ण में आता है, किन्तु कभी–कभी बाद वाले वर्ण में भी। जैसे – तत् + आगमनम् = तदागमनम् (केवल पहले वर्ण में)।

व्यंजनसन्धि के मुख्य भेद –

इसके प्रमुख नियम निम्नलिखित हैं –

1 **श्चुत्वसन्धि** (तालव्य – भाव सन्धि) स् को श्, तवर्ग को चवर्ग।

नियम – स्तोः श्चुना श्चुः, सकार या तवर्ग का शकार या चवर्ग के साथ (आगे या पीछे) मेल हो तो स्–श् में और तवर्ग–चवर्ग में बदल जाता है।

उदाहरण –

(i) स्–श्

मनस् + चलित = मनश्चलति	कस् + चित् = कश्चित्
रामस् + शेते = रामश्शेते	दुस् + चरित्रम् = दुश्चरित्रम्
देवस् + च = देवश्च	वहिस् + शाम्यति = वहिश्शाम्यति
चन्द्रस् + शोभते = चन्द्रश्शोभते	श्रेयस् + चापि = श्रेयश्चापि

(ii) तवर्ग–चवर्ग

सत् + चित् = सच्चित्	तद् + जयः = तज्जयः
सत् + चरित्रम् = सच्चरित्रम्	राजन् + जयः = राजञ्जयः
सत् + चन्द्र = सच्चन्द्रः	याच् + ना = याञ्चा
उत् + चारणम् = उच्चारणम्	यज् + न = यज्ञः
सद् + जनः = सज्जनः	तद् + झंकारः = तज्झंकारः
उत् + चरति = उच्चरति	राज् + नः = राज्ञः
तद् + जालम् = तज्जालम्	तत् + छत्रम् = तच्छत्रम्

अपवाद – शकार के बाद तवर्ग के आने पर तवर्ग का चवर्ग नहीं होता। (शात्) जैसे –

प्रश् + नः = प्रश्नः विश् + नः = विश्नः

2 ष्टुत्वसन्धि (मूर्धन्य भाव सन्धि) स् को ष्, तवर्ग को टवर्ग

नियम – ष्टुना ष्टुः – स् या तवर्ग का यदि ष् या टवर्ग के साथ (आगे या पीछे) मेल हो तो स् के स्थान में ष् और तवर्ग के स्थान में टवर्ग अर्थात् मूर्धन्य वर्ण हो जाता है।

उदाहरण –

(i) स्–ष्

रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः।

धनुस् + टंकारः = धनुष्टंकारः

(i) तवर्ग – टवर्ग –

तत् + टीका = तट्टीका।	बृहन् + णकारः = बृहण्णकारः
इष् + तः = इष्टः	पुष् + तिः = पुष्टिः
आकृष् + तः = आकृष्टः	षष् + थः = षष्टः
सत् + टीकते = सट्टीकते	तत् + टंकारः = तट्टंकारः
उद् + डयनम् = उड्डयनम्	मत् + डमरूः = मड्डमरूः
चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे	उत् + डीयते = उड्डीयते
द्रष् + ता = द्रष्टा	कृष् + नः = कृष्णः
हृष् + तः = हृष्टः	द्विट् + धिः = द्विट्ढिः
षट् + नाम् = षण्णाम्	षट् + नवतिः = षण्णवतिः

अपवाद – सन् + षष्ठः = सन्षष्ठः।

षट् + सन्तः = षट्सन्तः।

3 जश्त्वसन्धि (प्रथम अक्षर को तीसरा अक्षर)

नियम – झलां जशोऽते – पूर्व पद के अन्त में क्, च्, ट्, त्, प् हों और उसके परे कोई स्वर या वर्गों को तीसरा, चौथा, पांचवां अक्षर अथवा य, र, ल, व हो तो उन्हें क्रम से ग, ज्, ड्, द्, ब् (जश्) हो जाते हैं।

उदाहरण –

(i) क् को ग्

वाक् + ईशः = वागीशः	वाक् + आडम्बरम् = वागाडम्बरम्
दिक् + गजः = दिग्गजः	वाक् + जालम् = वाग्जालम्
दिक् + अम्बरः = दिगम्बरः	त्वक् + इन्द्रियः = त्वागिन्द्रियः
वाक् + दानम् = वाग्दानम्	वाक् + ईश्वरः = वागीश्वरः

(ii) च् को ज् –

अच् + आदिः = अजादिः
अच् + अन्तः = अजन्तः

(iii) ट् को ड् –

षट् + अनुजाः = षडनुजाः
सम्राट + अस्ति = सम्राडस्ति।
षट् + आननम् = षडाननम्
परिव्राट् + आगच्छति = परिव्राडागच्छति
षट् + जः = षड्जः
विराट् + गच्छति = विराडगच्छति

(iv) त् को ब्

जगत् + ईश्वरः = जगदीश्वरः
जगत् + धरः = जगद्धरः
सत् + आनन्द = सदानन्नदः
भगवत् + भक्तिः = भगवद् भक्तिः
सत् + धर्मः = सद्धर्मः
बृहत् + आरण्यकम् = बृहदारण्यकम्

(v) प् को ब्

अप् + जम् = अब्जम्।
सुप् + अन्तम् = सुबन्तम्

4 अनुनासिक–सन्धि (प्रथम अक्षर को पांचवां होना)

नियम–यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा – यदि वर्ग के प्रथम अक्षर के बाद कोई अनुनासिक वर्ण (ङ्, ञ्, न्, म् पाँच वर्ण) हों तो पहले को पाँचवां वर्ण विकल्प से हो जाता है अन्यथा जश्त्व सन्धि होगी।

उदाहरण –

(i) दिक् + मुखम् = दिङ्मुखम् (दिग्मुखम्)
दिक् + नागः = दिङ्नागः (दिग्नागः)
उदक् + मुखः = उदङ्मुखः (उदग्मुखः)
प्राक् + मुखः = प्राङ्मुखः (प्राग्मुखः)
षट् + मासा = षण्मासाः (षड्मासाः)
एतत् + मुरारिः = एतन्मुरारिः (एतद्मुरारिः)
जगत् + नाथः = जगन्नाथः (जगद्नाथः)
अप् + मुनते = अम्मनुते (अब्मनुते)

नोट – इन विकारों में प्राय सानुनासिक प्रयोग ही प्रचलित है।

(ii) प्रत्येय भाषायां नित्यम् –
बाद में आने वाला अनुनासिक वर्ण यदि प्रत्यय का हो तो सानुनासिक सन्धि (पांचवां वर्ण) ही होगी वहां वैकल्पिक रूप (जशत्व सन्धि) नहीं होगी। जैसे –

वाक् + मयम् = वाङ्मयम्
एतत् + मात्रम् = एतन्मात्रम्
सुप् + मयम् = सुम्मयम्

5 चतुर्थ वर्ण को तृतीय वर्ण होना

नियम–झलां जश् झशि – दो महाप्राण वर्ण एक साथ नहीं रहते। अतः चौथे वर्ण के बाद पुनः किसी वर्ग का चौथा वर्ण आ जाए तो पहले वाला चौथा वर्ण अल्पप्राण अर्थात् तीसरा अक्षर हो जाता है।

उदाहरण –

क्रुध् + धः = क्रुद्धः	दुध् + धम् = दुग्धम्
दध् + धः = दग्धः	शुध् + धिः = शुद्धिः
बुध् + धिः = बुद्धिः	वृध् + धिः = वृद्धिः
युध् + धम् = युद्धम्	सिध् + धिः = सिद्धिः
लभ् + धः = लब्धः	क्षुभ् + धः = क्षुब्धः
आरभ् + धः = आरब्धः	प्रारभ् + धम् = प्रारब्धम्

6 चर्त्वसन्धि

(अघोषी भाव सन्धि) (वर्ग का प्रथम अक्षर क्, च्, ट्, त्, प्, होना)

नियम – खरि च – वर्ग के तीसरे, चौथे वर्ग को प्रथम अक्षर हो जाता है, यदि बाद में वर्ग का प्रथम, द्वितीय वर्ण तथा श्, ष्, स् हो।

उदाहरण –

(i) तीसरे को प्रथम वर्ण –

दिग् + पालः = दिक्पालः
विपद् + कालः = विपत्कालः
छेद् + ता = छेत्ता
सम्पद् + सु = सम्पत्सु
भेद् + स्यति = भेत्स्यति
सद् + कारः = सत्कारः

(ii) चौथे को प्रथम वर्ण –

ककुभ् + सु = ककुप्सु
योध् + स्यति = योत्स्यति
लभ् + स्यते = लप्स्यते
ककुभ् + प्रकाशते = ककुप्प्रकाशते

7 अनुस्वारसन्धि (म् / न् को अनुस्वार)

नियम – 1. मोऽनुस्वार – पद के अन्तिम म् का अनुस्वार (ं) हो जाता है यदि उससे परे कोई भी व्यंजन हो।

उदाहरण –

(i) म् को अनुस्वार –

रामम् + वन्दे = रामं वन्दे

मातरम् + नमतिः = मातरं नमति

धनम् + यच्छति = धनं यच्छति

ग्रामम् + गच्छति = ग्रामं गच्छति

सम् + हारः = संहारः

सम् + योगः = संयोगः

कथम् + वा = कथं वा

अपवाद – अपदान्त 'म्' में यह नियम लागू नहीं होता।

जैसे – गम्यते, नम्यते, शाम्यते आदि।

(ii) न् को अनुस्वार–नियम–नाश्चापदान्तस्य झलि – अपदान्त न् क बाद यदि अन्तःस्थ तथा अनुनासिक को छोड़कर कोई अन्य व्यंजन हो तो न् के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है।

उदाहरण –

यशान् + सि = यशांसि

मन् + स्यते = मंस्यते

विद्वान् + सौ = विद्वांसौ

8 परसवर्णसन्धि (अनुस्वार को पांचवां वर्ण)

नियम–वा पदान्तस्य – यदि पदान्त 'म्' के बाद श्, ष्, स्, ह् को छोड़ कर कोई दूसरा व्यंजन (स्पर्श वर्ण) रहे ते म् को अनुस्वार के अतिरिक्त विकल्प से परसवर्ण (पांचवां अक्षर) भी हो जाता है।

उदाहरण –

ग्रामम् + गच्छति = ग्रामङ्गच्छति (ग्रामं गच्छति)

गृहम् + चल = गृहञ्चल (गृहं चल)

एताम् + टीकाम् = एताण्टीकाम् (एतां टीकाम्)

कीर्तिम् + तनोति = कीर्तिन्तनोति (कीर्तिं तनोति)

संस्कृत + पठति = संस्कृतम्पठति (संस्कृतं पठति)

घासम् + चरति = घासञ्चरति (घासं चरति)

(ii) नियम–अनुस्वार ययि परसवर्णः – अनुसार के बाद ष्, स्, ह्, य्, व्, र्, ल् को छोड़कर कोई भी व्यंजन (स्पर्श वर्ण) हो तो अनुस्वार को परसवर्ण (पिछले वर्ण का पांचवां अक्षर) हो जाता है।

उदाहरण –

सं + कल्पः = सङ्कल्पः

अं + कितः = अङ्कितः

अं + चितः = अञ्चितः

कुं + ठितः = कुण्ठितः

शां + तः = शान्तः

सं + तोषः = सन्तोषः

गुं + फितः = गुम्फितः

सं + पूर्णम् = सम्पूर्णम्

आक्रां + तः = आक्रान्तः

लं + घितः = लंघितः

नं + दितः = नन्दितः

जृं + भितः = जृम्भितः

9 लत्वसन्धि (तवर्ग को ल्)

नियम–तोर्लिः – तवर्ग के बाद ल् आये तो तवर्ग का ल् हो जाता है। किन्तु 'न्' के बाद 'ल्' आने पर सानुनासिक ल् (लँ) होता है।

उदाहरण –

तत् + लीनः = तल्लीनः

तत् + लयः = तल्लयः

महान् + लाभः = महांल्लाभः

विद्वन् + लिखित = विद्वांल्लिखति

10 छत्वसन्धि (श् को छ)

नियम–शश्छोऽटि – यदि तवर्ग से परे 'श्' हो तो, 'श्' को 'छ्' हो जाता है।

उदाहरण –

तत् + श्रुत्वा = तच्छ्रुत्वा

एतत् + शोभनम् = एतच्छोभनम्।

सत् + शास्त्रम् = सच्छास्त्रम्।

आगममूलक व्यंजनसन्धियाँ

कुछ व्यंजन संधियां ऐसी हैं जिनमें किसी अन्य व्यंजन का आगम हो जाता है। उसके बाद अन्य विकार भी हो जाते हैं। यहाँ केवल च् (तुक् आगम) आगम और रु (स्) आगम का ही उल्लेख किया जा सकता है।

11 च् (तुक्) आगमसन्धि

नियम–छे च –

(i) ह्रस्व स्वर से परे छ् हो तो दोनों के बीच में तुक् (त् = च्) का आगम हो जाता है। और त् से परे 'छ' होने के कारण 'त्' को 'च्' हो जाता है।

उदाहरण –

तरु + छाया = तरुच्छाया

अनु + छेदः = अनुच्छेदः

शिव + छाया = शिवच्छाया

परि + छेदः = परिच्छेदः

(ii) नियम पदान्ताद् वा –

यदि किसी पद के अन्त में दीर्घ स्वर हो और उससे परे 'छ्' हो तो दोनों के बीच च् (तुक्) का आगम विकल्प से हो जाता है।

उदाहरण –

लता + छाया = लताच्छाया (लता छाया)

लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया (लक्ष्मी छाया)

12 रु (स) आगमसन्धि

(i) नियम–सम्पुंकानां सो वक्तव्यः

सम्, पुम् और कान् में स् (रु) का आगम हो जाता है तदनन्तर म् और न् को विकल्प से अनुस्वार और अनुनासिक हो जाते हैं।

उदाहरण –

सम् + कर्ता = सम् + स् + कर्त्ता = संस्कर्ता, सँस्कर्ता।

सम् + करोति = सम् + स् + करोति = संस्करोति, सँस्करोति।

पुम् + कोकिलः = पुम् + स् + कोकिलः = पुंस्कोकिलः, पुँस्करोकिलः

कान् + कान् = कान् + स् + कान् = कांस्कान्, काँस्कान्

(ii) नियम–नश्छव्यप्रशान

इसी प्रकार प्रदान्त 'न' से परे च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ् (छव्) परे होने पर स् का आगम हो जाता है।

उदाहरण –

कस्मिन् + चित् = कस्मिन् + स् + चित्

= कस्मिंस्चित् कस्मिंश्चित्, (स् = श्)

पिबन् + चलति = पिबन् + स् + चलति

= पिबंस्चलति, पिबंश्चलति (स् = श्)

भवान् + छात्रः = भवान् + स् + छात्रः

= भवांस्छात्रः, भवांश्छात्रः (स् = श्)

महान् + टंकार = महान् + स् + टंकारः

= महांस्टंकारः, महाष्टंकारः (स् – ष्)

चक्रिन् + त्रायस्व = चक्रिन् + स् + त्रायस्ब

= चक्रिंस्त्रायस्व, चक्रिंस्त्रायस्व (स् = स्)

13 अनुनासिक वर्णों की द्वित्वसन्धि (ङ्, ण्, न् को द्वित्व)

नियम–ङमोह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् – ह्रस्व वर्ण के बाद यदि ङ्, ण्, न्, (ङम्) हो और उसके बाद कोई स्वर हो तो क्रमशः ङ्, ण्, न् को द्वित्व हो जाता है।

उदाहरण –

तस्मिन् + एव = तस्मिन्नेव

हसन् + अपि = हसन्नपि

सन् + अच्युतः = सन्नच्युतः

सन् + अन्तः = सन्नन्तः

खादन् + इव = खादन्निव

प्रत्यङ् + आत्मा = प्रत्यङ्ङात्मा

सुगण् + ईशः = सुगण्णीशः

14 न् का लोप और पूर्व स्वर की दीर्घत्वसन्धि

नियम–ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽण – र् के बाद यदि र् हो तो पहले र् का लोप हो जाता है और उसके पूर्ववर्ती स्वर को दीर्घ हो जाता है।

उदाहरण –

निर् + रसः = नीरसः

पुनर् + रनते = पुनारमते

हरिर् + रम्यः = हरीरम्यः

निर् + रवः = नीरवः

हरिर् + रक्षित = हरीरक्षति

भानुर् + राजते = भानूराजते

अन्तर् + राष्ट्रियः = अन्ताराष्ट्रियः

स्वर् + राज्यम् = स्वाराज्यम्

गुरुर् + रमते = गुरूरमते।

अन्तर् + राज्यम् = अन्ताराज्यम्

15 पूर्वसवर्णसन्धि (ह् को चौथा वर्ण)

नियम–झयो होऽन्यतरस्यसाम्

वर्गो के प्रथम, द्वितीय, तृतीय या चौथे वर्ण (झय्) के बाद यदि 'ह' आए तो उसका पूर्व सवर्ण अर्थात् पूर्ववर्ती वर्ण का चौथा वर्ण (घ्, झ्, ढ्, ध्, भ्) होता है विकल्प से।

उदाहरण –

वाग् + हरिः = वाग्घरिः (वाग्हरिः)

पद् + हतिः = पद्धतिः (पद्हतिः)

उद् + हारः = उद्धारः (उद्हारः)

एतद् + हि = एतद्धि (एतद्हि)

तद् + हितम् = तद्धितम् (तद्हितम्)

16 णत्वसन्धि (न् को ण् होना)

(i) नियम–रषाणं नोणः समानपदे

यदि किसी पद के अन्दर ऋ, ॠ, र्, ष् इन चार वर्णों से परे 'न्' हो तो उस 'न्' को 'ण्' हो जाता है।

उदाहरण –

चतुर् + नाम् = चतुर्णाम्	उष् + नः = उष्णः
भ्रातृ + नाम् = भ्रातृणाम्	कर्तृ + नाम = कर्तृणाम्
कीर् + नः = कीर्णः	कृष् + नः = कृष्णः
तीर् + नः = तीर्णः	पूष् + नः = पूष्णः

(ii) नियम–अट्कुप्वां नुम् व्यवायेऽपि

यदि उपर्युक्त वर्णो (ऋ, र्, ष्) और न् के मध्य कोई स्वर कवर्ग, य, र्, व्, ह्, आए या नुम्, (अनुस्वार) का व्यवधान भी हो तो भी 'न्' को ण् हो जाता है।

उदाहरण –

स्वर व्यवधान होने पर – नराणाम्, महर्षिणा, गिरिणा

कवर्ग व्यवधान होने पर–तर्केण, मूर्खेण

पवर्ग व्यवधान होने पर–दर्भेण, दर्पेण, रामेण

य्, र्, व्, ह् व्यवधान होने पर–गृहेण, प्रायेण

नुम् (अनुस्वार) व्यवधान होने पर–बृंहणम्,

उपवाद–नपदान्तस्य

पद के अन्त में 'न्' का ण् नहीं होता। जैसे –

रामान्, पितॄन्, दर्पान्, आर्यान्, आदि।

अभ्यासार्थ प्रश्न

(लघूत्तरात्मक)

1. निम्नलिखित में सन्धि कीजिये –

इष् + तः
सत् + जनः
षट् + आननः
भवान् + लिखति
महत् + चिन्ता
तत् + लयः
प्रश् + नः
तद् + हविः
मत् + शत्रुः
शार्ङ्गिन् + जयः
शत्रून् + जयः
कस्मिन् + चन
महत् + चित्रम्
नखान् + छिनवत्ति
वाक् + मन्त्रणम्
लघु + छत्रम्
विद्वान् + टीकते
पयोमुक् + वर्षतिः
विद्वान् + शोभते
उत् + नाम्
पितृ + नाम्

राजन् + इह
गुरुम् + वन्दस्व
तस्मिन् + एव
तत् + लीन्
सत् + चित्
सत् + चित् + आनन्द
सत्यम् + वद
तत् + श्रुत्वा
गम् + तव्यम्
महत् + धनम्
जगत् + शान्तिः
पुम् + कोकिलः
विपद् + जालम्
षट् + मुखः
परि + छिन्नः
तत् + श्रृतम्
करान् + चालयति
दिक् + इयम्
सं + पूर्णम्
गिरि + ना

2. निम्नलिखित में सन्धिविच्छेद कीजिए –

उच्चारणम्
तच्छुत्वा
हसन्नुवाच
जगदीशः
दुष्टः
तच्छिवः
दिङ्नागः
वाङ्मयम्
स्रग्लोभः
दिग्पालः
वागीशः
उल्लेखः
नीरसः
सन्नच्युतः

सज्जनः
सच्चिदानन्दः
अजन्तः
मदिच्छा
जयद्रथः
द्रष्टा
जगन्नाथः
तल्लीनः
वृक्षच्छाया
उद्धारः
तट्टीका
ग्राममागच्छ
महांल्लाभः

3. शुद्ध करो –

महान्नन्धः	कुर्वन्नस्ति
गृहं एति	निराजनम्
तद्मयम्	योद्स्यति
विपत्जालम्	सिध्धिः

4. जशत्व और चर्त्व सन्धि उदाहरण पूर्वक बताओ।

5. व्यंजन सन्धि की परिभाषा स्पष्ट करें।

3. विसर्ग–सन्धि

लक्षण – विसर्ग (:) से परे स्वर अथवा व्यंजन होने पर विसर्ग का जो विकार (परिवर्तन) होता है उसे विसर्ग–सन्धि कहते हैं।

विसर्ग–सन्धि के भेद – विसर्ग–सन्धि के मुख्यतः पांच प्रकार हैं –

(i) विसर्ग के स्थान पर श्, ष्, स् होना।
(ii) विसर्ग के स्थान पर जिह्वामूलीय तथा उपध्मानीय होना।
(iii) विसर्ग के स्थान पर पूर्व स्वर (अ) सहित 'ओ' हो जाना।
(iv) विसर्ग का लोप हो जाना।
(v) विसर्ग का र् हो जाना।

टिप्पणी – इन पाँचों में पहली दो सन्धियों में विकार तब होता है जब विसर्ग से परे **अघोष वर्ण** (प्रत्येक वर्ग के पहले–दूसरे अक्षर तथा श्, ष्, स्, खर् प्रत्याहार) हों और बाद की तीन सन्धियों में विकार तब होता है तब विसर्ग से परे कोई स्वर या घोष अक्षर (शेष व्यंजन तथा सम्पूर्ण स्वर–अश् प्रत्याहार) हो।

अतः विसर्ग–सन्धि को प्रमुख रूप से दो विभागों में विभक्त किया जा सकता है–

(क) अघोषपरक विसर्ग–सन्धि।
(ख) घोषपरक विसर्ग–सन्धि।

(क) अघोष वर्णपरक विसर्ग सन्धि

1. सत्व–सन्धि

(विसर्ग (:) को श्, ष्, स)

नियम – (i) विसर्जनीयस्य सः – विसर्ग (:) के बाद च्, छ् होने पर विसर्ग का श्, ट्, ठ् होने पर ष् और त्, थ् होने पर स् हो जाता है।

उदाहरण –

(i) पूर्णः + चन्द्रः = पूर्णश्चन्द्रः
निः + चलः = निश्चलः
शिरः + छेदः = शिरश्छेदः
रामः + छेदः = रामश्चलति

देवः + छिनत्ति = देवश्छिनत्ति

गौः + चरति = गौश्चरति

गौरः + छात्रः = गौरश्छात्रः

धनुः + टङ्कारः = धनुष्टङ्कारः

छात्रः + टीकते = छात्रष्टीकते

चतुरः + ठक्कुरः = चतुष्ठक्कुरः

नमः + ते = नमस्ते

बालाः + तिष्ठन्ति = बालास्तिष्ठन्ति

मनुष्यः + तरति = मनुष्यस्तरति

शिवः + त्रायते = शिवस्त्रायते

मनः + तापः = मनस्तापः

इतः + ततः = इतस्ततः

यशः + तनोति = यशस्तनोति

(ii) विसर्ग को विकल्प से श्, ष्, स् होना

नियम–वा शरि – विसर्ग के बाद यदि श्, ष्, स् (शर्) आये ते विसर्ग को क्रमशः श्, ष्, स् या के बाद च्, छ् होने पर विसर्ग का श्, ट्, ठ् होने पर ष् और त्, थ् होने पर स् हो जाता है।

उदाहरण –

रामः + शेते = रामश्शेते, रामः शेते।

दुः + शासनः = दुश्शासनः, दुःशासन।

रामः + शयितः = रामश्शयितः, रामःशयित

रामः + षष्ठः = रमष्षष्ठः, रामःषष्ठः।

मत्तः + षट्पदः = मत्तष्षट्पदः, मत्तःषट्पटः।

निः + सन्देहः = निस्सन्देहः, निःसन्देहः।

प्रथमः + सर्गः = प्रथमस्सर्गः, प्रथमःसर्गः

कृष्णः + सर्पः = कृष्णस्सर्पः, कृष्णःसर्पः

(iii) विसर्ग को नित्य ष् –

नियम–इदुपधस्य चाप्रत्ययः – विसर्ग से पूर्व यदि इ या उ हो और बाद में क् ख् या प् फ् में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग के स्थान में 'ष्' हो जाता है।

उदाहरण –

दुः + कर्म = दुष्कर्म

चतुः + पादः = चतुष्पादः

निः + कर्म = निष्कर्म

निः + फलः = निष्फलः

धनुः + पाणिः = धनुष्पाणिः

धनु + कपालम् = धनुष्कपालम्

आयुः + कामः = आयुष्कर्म

निः + प्रत्यूहम् = निष्प्रत्यूहम्

वहि + कृतम् = बहिष्कृतम्

चतुः + कपालः = चतुष्कपालः

चतुः + फलम् = चतुष्फलम्

सर्पिः + कुण्डिका = सर्पिष्कुण्डिका

निः + कामः = निष्कामः

दुः + कृतम् = दुष्कृतम्

चतुः + पथम् = चतुष्पथम्

(iv) विसर्ग को स् –

नियम–नमः पुरसोर्गत्यो – गति संज्ञक नमः और पुरः के बाद यदि क् ख् या प् फ् आए तो विसर्ग को 'स्' हो जाते हैं।

उदाहरण –

नमः + कारः = नमस्कारः।

पुरः + कारः = पुरस्कारः।

तिरः + कारः = तिरस्कारः

नमः + करोति = नमस्कारोति।

पुरः + करोति = पुरस्कारोति।

तिरः + करोति = तिरस्करोति।

2. विसर्ग को जिह्वामूलीय या उपध्मानीय सन्धि

नियम – विसर्ग के बाद क्–ख् हों तो विसर्ग को जिह्वामूलीय हो जाता है। यदि प्– फ् हों तो विसर्ग को उपध्मानीय हो जाता है। दोनों चिन्ह होता है। अथवा विसर्ग के स्थान पर विसर्ग रहता है।

उदाहरण –

देवः + करोति = देवः करोति।

देवः + खादति = देवः खादति।

रामः + पचति = रामः पचति।

वृक्षः + फलाति = वृक्षः फलति

(ii) घोषवर्णपरक विसर्ग सन्धि

3. उत्व सन्धि विसर्ग को ओ (अः = ओ)

नियम – (i) अतोरोप्लुतादप्लुते – विसर्ग से पहले यदि अ हो और बाद में भी अ हो तो विसर्ग का उ हो जाता है। इसके बाद गुणसन्धि तथा पूर्वरूपसन्धि हो जाती है।

उदाहरण –

बालः + गच्छति = बालो गच्छति

देवः + जयति = देवो जयति।

रामः + धावति = रोमो धावति।

नरः + बिभेति = नरो बिभेति।

कः + याति = को याति।

मनः + रथः = मनोरथः

सूर्यः + लीयते = सूर्यो लीयते।

नमः + वयम् = नमो वयम्।

शिवः + वन्द्यः = शिवो वन्द्यतः।

छात्रः + हसति = छात्रो हसति।

4. विसर्ग को र् (रुत्व) सन्धि

नियम – (i) यदि वसर्ग से पहले अ, आ को छोड़ कर कोई अन्य स्वर हो तथा विसर्ग से परे कोई स्वर या वर्ग का तीसरा, चौथा, पांचवां वर्ण, य्, र्, ल्, व्, ह (घोष व्यंजन) हो तो विसर्ग को 'र्' हो जाता है।

उदाहरण –

मुनिः + अयम् = मुनिरयम्।

कविः + आगच्छति = कविरागच्छति।

मातृः + इच्छा = मातृरिच्छा।

गुरुः + जयति = गुरुर्जयति।

हरिः + वदति = हरिर्वदति

साधोः + एषा = साधोरेषा।

तैः + उक्तम् = तैरुक्तम्।

(ii) मूलभूत 'र' के स्थान में होने वाले विसर्ग को अर्थात् जो विसर्ग 'रु' (रुत्व सन्धि) न हो वर्ग का तीसरा, चौथा, पांचवां अक्षर य्, र्, ल्, व् ह् होने पर फिर से 'र्' हो जाता है। इसे कुछ विसर्ग सन्धियों (उत्व सन्धि, र् लोप सन्धि) का अपवाद भी कहा जाता है।

उदाहरण –

प्रातः + अद्य = प्रातरद्य।

मातः + देहि = मातर्देहि।

पुनः + अयम् = पुनयरम्।

पितः + आयाहि = पितरायाहि

स्वः + गतः = स्वर्गतः।

पुनः + एहि = पुनरेहि।

5. विसर्गलोपसन्धि

नियम – (i) भी–भगो–अधो–अपूर्वस्य योऽशि – यदि भोः, भगोः, अधोः शब्दों के विसर्ग परे कोई स्वर या वर्ग का तीसरा, चौथा, पांचवां वर्ण, य् र् ल् व् ह् हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

उदाहरण –

भोः + ईश = भो ईश।

भगोः + नमस्ते = भगो नमस्ते।

भोः + देवाः = भो देवाः।

अधोः + याहि = अधो याहि।

(ii) यदि विसर्ग से पहले ह्रस्व 'अ' हो और उससे परे भी ह्रस्व 'अ' को छोड़कर कर कोई अन्य स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

उदाहरण –

अतः + एव = अत एव।

कः + एति = क एति।

देवः + उवाच = देव उचाव।

देवः + इह = देव इह।

नरः + इव = नर इव।

सूर्यः + उदेति = सूर्य उदेति।

एष :+ इच्छति = एष इच्छति।

सः + उवाच = स उवाच।

कुतः + आयातः = कुत आयातः।

कः + एषः = क एषः।

(iii) यदि विसर्ग से पूर्व 'आ' हो और उससे परे कोई भी स्वर या वर्ग का तीसरा, चौथा, पांचवां वर्ण, य्, र्, ल्, व्, ह् (घोष व्यंजन) हो तो भी विसर्ग का लोप हो जाता है।

उदाहरण –

देवाः + आगच्छन्ति = देवा आगच्छन्ति।

कन्याः + इच्छन्ति = कन्या इच्छन्ति।

देवाः + इह = देवा इह।

बालाः + ऊचुः = बाला ऊचुः।

नृपाः + अत्र = नृपा अत्र।

पवनाः + वहन्ति = पवना वहन्ति।

देवाः + रक्षन्ति = देवा रक्षन्ति।

शिष्याः + हसन्ति = शिष्या हसन्ति।

छात्राः + नमन्ति = छात्रा नमन्ति।

देवाः + जयन्ति = देवा जयन्ति।

मृगाः + धावन्ति = मृगा धावन्ति।

अध्यापकाः + वदन्ति = अध्यापका वदन्ति।

(iii) सः, एषः के विसर्ग का लोप –

नियम–एत्तदोः सुलोपोऽकोरनम् समासे हलि – यदि 'सः तथा एषः' इन शब्दों से परे ह्रस्व 'अ' को छोड़कर कोई भी स्वर या व्यंजन हो तो इनके विसर्ग का लोप हो जाता है।

उदाहरण –

सः + आगच्छति = स आगच्छति।

एषः + गच्छति = एष गच्छति।

सः + पठति = स पठति।

एषः + करोति = एष करोति।

सः + हरिः = स हरिः।

एषः + इच्छति = एष इच्छति।

सः + वदति = स वदति।

एषः + शेते = एष शेते।

1.4 अपनी प्रगति जांचिए

1 जिन शब्दों के अन्त में स्वर हो वे क्या कहलाते है ?

2 भ्वादि आदि दस गणों में क्रियावचन शब्द क्या कहलाता है ?

3 जिन धातुओं में ति, तः, अन्ति आदि प्रत्यय आते है वे कौन–सी धातु होती है ?

4 सन्धि मुख्यतः कितने प्रकार की होती है ?

5 'हितोपदेशः' शब्द का सन्धि विच्छेद क्या है ?

1.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में शब्दरूप, धातुरूप तथा सन्धि का विवेचन किया गया। पाठ्यक्रम में निम्नलिखित संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों के रूप निर्धारित है – राम, कवि, भानु, पितृ, लता, मति, नदी, धेनु, वधू, मातृ, फल, वारि, मधु, आत्मन्, दण्डिन्, वाच्, सरित्, सर्व, तद्, एतद्, यद्, किम्, इदम् (तीनों लिंगों में), अस्मद्, युस्मद्, एक, द्वि, त्रि, चतुर्, पंचन् (तीनों लिंगों में) तथा निम्नलिखित धातुरूप पाठ्यक्रम में निर्धारित है – परस्मैपदी – भू, पठ्, हस्, नम्, गम्,

अस्, हन्, क्रुध्, नश्, नृत्, अद्, इष्, पृच्छ्, चिन्त्; आत्मनेपदी – सेव्, लभ्, रुच्, मुद्, याच्; उभयपदी – कृ, नी, हृ, भज्, पच्।

शब्दरूप तथा धातुरूप का विवेचन करने के उपरान्त प्रस्तुत इकाई में सन्धि का विवेचन किया गया है। यहाँ स्पष्ट किया गया है कि ''कभी–कभी दो वर्णों के परस्पर संयोग या मेल से उनमें कुछ विकार उत्पन्न हो जाता है। यही विकार सन्धि का कारण बनता है अर्थात् दो वर्णों की अत्यन्त समीपता के कारण उनमें जो परिवर्तन होता है। उसे सन्धि कहते हैं।'' यदि स्वर का विकार होता है तो स्वर सन्धि, व्यंजन का विकार होता है तो व्यंजन सन्धि एवं विसर्ग का विकार होता है तो विसर्ग सन्धि। इस प्रकार सन्धि मुख्यतः तीन प्रकार की होती है।

1.6 मुख्य शब्दावली

- **हलन्त –** जिनके अन्त में कोई व्यंजन हो
- **अजन्त –** जिनके अन्त में कोई स्वर हो
- **तिङन्त –** धातुओं में तिङ् आदि जुड़ने के कारण उन्हें तिङन्त कहते हैं
- **आगम –** जहाँ वर्णों के बीच में एक नया वर्ण आ जाए
- **लोप –** जहाँ वर्णों में से एक लुप्त (लोप) हो जाए

1.7 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर

1 अजन्त
2 धातु
3 परस्मैपदी
4 तीन
5 हित + उपदेशः

1.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

1 सन्धि के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
2 स्वर, व्यंजन तथा विसर्ग सन्धि का विवेचन कीजिए।
3 'राम' शब्द के सम्पूर्ण रूप लिखिए।
4 'पठ्' धातु के लट् तथा लृट् लकार में सम्पूर्ण रूप लिखिए।
5 'सेव' धातु के लङ् तथा विधिलिङ् लकार में सम्पूर्ण रूप लिखिए।

1.9 आप ये भी पढ़ सकते हैं

1 रूपचन्द्रिका – डॉ० सुखराम, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
2 लघुसिद्धान्तकौमुदीप्रकाशिका, व्याख्याकार – डॉ० जीतसिंह, चौखम्बा पब्लिशर्स, वाराणसी।
3 रचनानुवादकौमुदी – डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4 संस्कृत–हिन्दी कोश – वामन शिवराम आप्टे, रचना प्रकाशन, जयपुर।
5 अनुवाद–चन्द्रिका – चक्रधर नौटियाल 'हंस', मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

इकाई – 2

छन्द

इकाई की रूपरेखा

2.1 परिचय

2.2 इकाई के उद्देश्य

2.3 छन्द प्रकरणम्

2.4 अपनी प्रगति जांचिए

2.5 सारांश

2.6 मुख्य शब्दावली

2.7 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर

2.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

2.9 आप ये भी पढ़ सकते हैं

2.1 परिचय

छन्दः शास्त्र के प्रवर्तक पिंगल ऋषि माने जाते हैं। छन्दः शास्त्र को वृत्तशास्त्र भी कहते हैं।

छन्द – जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि नियमों से युक्त होती है, उसे छन्द कहते हैं। पद्य लिखते समय अक्षरों की एक निश्चित व्यवस्था रखनी पड़ती है। यह व्यवस्था छन्द या वृत्त कहलाती है। छन्द का अर्थ है आच्छादन या आह्लादन, क्योंकि इसके द्वारा भाव या रस को आच्छादित किया जाता है अथवा पाठकों का आह्लादन (मनोरंजन) होता है।

छन्द (वृत्त) के भेद – प्रायः प्रत्येक श्लोक के चार खण्ड होते हैं, जो पाद या चरण कहे जाते हैं। जिस वृत्त के चारों पादों में समान अक्षर हों, वे समवृत्त कहलाते हैं। जिस के पहले और तीसरे तथा दूसरे और चौथे पाद अक्षरों की दृष्टि से समान हों, वे अर्ध समवृत्त कहलाते हैं। जिसके चारों पादों में अक्षरों की संख्या बराबर न हो, वे विषम वृत्त कहलाते हैं।

वर्ण या अक्षर – छन्दः शास्त्र की दृष्टि से केवल व्यंजन (क्, ख् आदि) अक्षर या वर्ण नहीं कहलाते। अकेला स्वर या व्यंजन सहित स्वर ही अक्षर कहलाता है। 'आ' 'का' और 'काम्' में छन्द शास्त्र की दृष्टि से एक ही अक्षर है, क्योंकि उनमें स्वर तो केवल एक 'आ' ही है। छन्द में अक्षर गिनते समय स्वर रहित व्यंजनों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है।

लघु गुरु – ह्रस्व अक्षरों (अ, इ, उ, ऋ, ऌ) को छन्द में लघु कहते हैं और दीर्घ अक्षरों (आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ) को गुरु कहते हैं। इस आधार पर 'क', 'कि' आदि लघु अक्षर है और 'का', 'की' आदि को गुरु अक्षर माना गया है। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित अवस्था में भी गुरु अक्षर माना जाता है –

सानुस्वारस्थ दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।

वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपिवा।।

अर्थात् अनुस्वारयुक्त, दीर्घ, विसर्गयुक्त और संयुक्त अक्षर से पहला अक्षर गुरु होता है। छन्द के बाद या चरण का अन्तिम अक्षर आवश्यकतानुसार लघु या गुरु दोनों माना जा सकता है। इस नियम के अनुसार 'कंस' में 'क' काल में 'का' दुःख में 'दु', और युक्त में 'यु' अक्षर गुरु हैं। गुरु का चिन्ह ऽ अथवा लघु चिन्ह (।) अथवा (–) है। गुरु को 'ग' तथा लघु का 'ल' कहा जाता है।

गण – छन्द शास्त्र में तीन–तीन अक्षरों के समूह को गण कहा गया है। ये गण आठ हैं – मगण, नगण, भगण, यगण, जगण, रगण, सगण और तगण। इन गणों के स्वरूप तथा उदाहरणों को अग्रलिखित तालिका से समझ लेना चाहिए।

गण	नाम	संक्षिप्त नाम	लक्षण	संकेत	उदाहरण
1.	मगण	म	तीनों अक्षर गुरु	ऽऽऽ	मान्धता
2.	नगण	न	तीनों अक्षर लघु	।।।	सरल
3.	भगण	भ	प्रथम अक्षर गुरु	ऽ।।	भोजन
4.	यगण	य	प्रथम अक्षर लघु	।ऽऽ	यशोदा
5.	जगण	ज	मध्यम अक्षर गुरु	।ऽ।	जवान
6.	रगण	र	मध्यम अक्षर लघु	ऽ।ऽ	राक्षसी
7.	सगण	स	अन्तिम अक्षर गुरु	।।ऽ	सविता
8.	तगण	त	अन्तिम अक्षर लघु	ऽऽ।	आकाश

गणों का स्वरूप स्मरण करने के लिए निम्नलिखित श्लोक सहायक है –

मस्त्रिगुरुः त्रिलघुश्च नकारो भादि गुरुः, पुनारदिर्लघुर्यः।

जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः।।

अथवा

यमाताराजभानसलगाः – इस पंक्ति में अक्षरों के लघु और गुरु का जो क्रम है, वही गण का क्रम होगा। इस पंक्ति में सभी गणों का क्रम समाविष्ट है।

मात्रा – ह्रस्व या लघु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है, उसे एक मात्रा कहते हैं और दीर्घ या गुरु के उच्चारण काल को दो मात्राएं कहते हैं। अतः जब छन्दों में (मात्रिक छन्दों–जाति छन्दों में) मात्राओं की गिनती की जाती हैं, तब लघु की एक और गुरु अक्षर की दो मात्राएं गिनी जाती है। एक ही शब्द में अक्षरों और मात्राओं की संख्या समान हो सकती है और भिन्न–भिन्न भी। जैसे – 'कल' में दो अक्षर और दो ही मात्राएं। 'काल' में दो अक्षर और तीन मात्राएं हैं। 'काला' में दो अक्षर और चार मात्राएँ।

यति – छन्द के मध्य में विश्राम स्थल (अर्द्ध–विराम) को यति या विराम कहते हैं।

गति – छन्दों में अक्षरों या मात्राओं की नियत संख्या से भी काम नहीं चलता उसमें गति, लय या प्रवाह का ध्यान भी रखना पड़ता है। गति का अर्थ है – श्लोक का धारा प्रवाह में पढ़ा जाना।

छन्दों के अन्य भेद – छन्दों के मुख्य रूप से दो भेद हैं – वार्णिक छन्द और मात्रिक छन्द। वार्णिक छन्द को वृत्त तथा मात्रिक छन्द को जाति छन्द भी कहते हैं। वार्णिक छन्दों के चरणों में गुरु–लघु–क्रम। प्रायः समान होता है, परन्तु मात्रिक छन्दों में यह बन्धन नहीं होता। उक्त दोनों भेदों के तीन–तीन अवान्तर भेद भी होते हैं –

1 **सम–छन्द –** चारों चरणों में वर्ण या मात्राएं समान होती हैं।

2 **अर्ध–समछन्द –** प्रथम और तृतीय तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों में समान वर्ण समान मात्राएँ होती है।

3 **विषम छन्द –** प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या विषम होती है।

2.2 इकाई के उद्देश्य

- छन्द के स्वरूप से अवगत हो पाएंगे;
- छन्द के भेदों का विवेचन कर सकेंगे;
- पाठ्यक्रम में निर्धारित अनुष्टुप, आर्या, इन्द्रवज्रा आदि छन्दों के लक्षण तथा उदाहरणों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- यति तथा गति की अवधारणा को समझ सकेंगे;
- लघु एवं गुरु का विश्लेषण कर सकेंगे।

2.3 छन्द प्रकरणम्

1. अनुष्टुप् (श्लोक) – (आठ अक्षरों वाला समवृत्त छन्द)

संस्कृत के छन्दों में यह सबसे अधिक प्रचलित छन्द है। मुख्यतः रामायण, महाभारत और पुराणादि में इसी छन्द का प्रयोग हुआ है। इसके प्रत्येक पाद (चरण) में आठ अक्षर होते हैं। इसे आठ अक्षरों वाला समृत्त छन्द भी कहा जा सकता है।

लक्षण – **श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं**
सर्वत्र लघु पंचमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं
सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।

अर्थात् इस छन्द के चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं। कुल मिलाकर श्लोक में 32 अक्षर होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में पांचवां वर्ण लघु होता है छठा गुरु होता है। द्वितीय तथा चतुर्थ चरणों का सातवां वर्ण लघु होता है। प्रथम तथा तृतीय चरणों का सातवां वर्ण गुरु। शेष वर्णों के गुरु तथा लघु विषयक कोई नियम नहीं होता।

उदाहरण – यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
। ऽ ऽ । ऽ ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
। ऽ ऽ । ऽ ।

अथवा

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये
ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ।। ऽ। ऽ

जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।।
। । ऽ ।। ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ।। ऽ। ऽ

अन्य उदाहरण –

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयोगुणाः।।

अथवा

अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् संगतं रहः।
अज्ञात ह्रदयेष्वेवं वैरी भवति सौह्रदम्।

2. **इन्द्रवज्रा** – (त, त, ज, ग, ग, ग्यारह अक्षरों का समवृत्त)

लक्षण – स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।

जिस छन्द के प्रत्येक पाद में दो तगण, एक जगण और दो गुरु इस वर्ण क्रम से 11 अक्षर हों, वह इन्द्रव्रजा कहलाता है।

उदाहरण –

त त ज ग ग

स्वर्गच्यु तानामि हजीव लो के

ऽ ऽ। ऽ ऽ। । ऽ। ऽ ऽ

चत्वारि चिन्हानि वसन्ति देहे।

दानं प्रसंगो मधुरा च वाणी

देवार्चनं पण्डिततर्पणंच।।

अन्य उदाहरण –

अर्थोहि कन्या परकीय एव

तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।

जातो ममायं विशदः प्रकामं

प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।

3. **उपेन्द्रवज्रा** – (ज, त, ज, ग, ग, ग्यारह अक्षरों का समवृत्त)

लक्षण – उपेन्द्रवज्रा जतजाः ततो गौ।

जिसके प्रत्येक पाद में क्रमशः एक जगण, एक तगण, एक जगण और दो गुरु इस क्रम से 11 अक्षर होते हैं, वह छन्द उपेन्द्रवज्रा कहलाता है।

उदाहरण –

ज त ज ग ग

त्वमेव माता च पिता त्वमेव

। ऽ। ऽ ऽ । । ऽ । ऽऽ

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव

त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

अन्य उदाहरण –

पिता सखायो गुरवः स्त्रियश्च

न निर्गुणानां हि भवन्ति लोके।

अनन्य भक्ताः प्रियवादिनश्च

हिताश्च वश्याश्च भवन्ति राजन्।।

4. उपजाति – (ग्यारह अक्षरों वाला समवृत्त)

लक्षण – अनन्तरोदीरित लक्ष्म भाजौ

पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।

इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु

वदन्ति जातिष्विदमेव नाम।।

अर्थात् इससे पूर्व कहे गए इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के चिन्हों को धारण करने वाले जिनके दो–दो चरण हों अर्थात् जिस पद्य के पादों में इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा छन्दों का मिश्रण हो और प्रत्येक पाद में 11 अक्षर हों उसे उपजाति कहते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि छन्दों का मिश्रण बराबर–बराबर हो। यह भी सम्भव है कि एक पद्य में उक्त दोनों छन्दों के दो–दो पाद हों अथवा यह भी सम्भव है कि चारों चरणों में से एक में इन्द्रवज्रा छन्द हो और शेष तीन चरणों में उससे भिन्न छन्द हों। इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के अतिरिक्त अन्य छन्दों के मिश्रण होने पर भी, उस छन्द को भी उपजाति ही कहते हैं।

इस प्रकार इसके दो भेद हो जाते हैं – 1. अर्द्ध–सम उपजाति – जिसके किन्हीं दो चरणों में इन्द्रवज्रा तथा दो चरणों में उपेन्द्रवज्रा छन्द हों। विषम उपजाति – इसमें उक्त दोनों छन्दों में किसी एक का एक चरण हो और शेष में तीन चरण उससे भिन्न के हों।

(i) **उदाहरण –** (अर्द्ध–समवृत्त उपजाति)

तगण तगण जगण गुरु गुरु = इन्द्रवज्रा

एकात पत्रं जगतः प्रभुत्वं

ऽ ऽ । ऽ ऽ ।। ऽ । ऽऽ

जगण तगण जगण गुरु–गुरु = उपेन्द्रवज्रा

नवं वयः कान्तमिदं वपुश्च।

। ऽ । ऽ ऽ ।। ऽ । ऽ ऽ

अल्पस्य हेतोः बहुहातुमिच्छन्।

विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्।।

इसमें दो चरणों (प्रथम तथा तृतीय) का छन्द इन्द्रवज्रा है। शेष दो (दूसरा तथा चौथा) चरणों का उपेन्द्रवज्रा है। अतः यह अर्द्ध–समवृत्त उपजाति छन्द है।

(ii) **उदाहरण –** (विषमवृत्त उपजाति)

जगण तगण जगण दो गुरु = उपेन्द्रवज्रा

क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः

। ऽ । ऽ ऽ ।। ऽ ।ऽऽ

क्षत्रस्य शब्दः भुवनेषु रुढ़ः।

राज्येन किं तद् विपरीतवृत्तेः = इन्द्रवज्रा

प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा।

इस पद्य के प्रथम चरण में उपेन्द्रवज्रा **(जतजास्ततो गौ)** छन्द है। शेष तीन चरणों में इन्द्रवज्रा **(यदि तौ जगौ गः)** छन्द है। अतः एक समान मिश्रण न होने के कारण यहां विषमवृत्त उपजाति छन्द है।

(iii) **उदाहरण – सम उपजाति**

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवात्मा = इन्द्रवज्रा

हिमालयो नाम नगाधिराजः = उपेन्द्रवज्रा

5. वंशस्थ – (12 अक्षरों वाला समवृत्त) (ज, त, ज, र)

लक्षण – जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ

अर्थात् वंशस्थ छन्द के प्रत्येक पाद के जगण, तगण, जगण और रगण के क्रम से बारह अक्षर होते हैं।

उदाहरण –

जगण तगण जगण रगण

। ऽ। ऽऽ। । ऽ। ऽ।ऽ

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः

नवाम्बुभिर्भुमिविलम्बिनो घनाः।

अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः

स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।

अन्य उदाहरण –

उदेति पूर्व कुसुमं ततः फलम्

घनोदयः प्राक् तदनन्तरं पयः।

निमित्त नैमित्तिकयोरयं क्रम

स्तव प्रसादस्य पुरस्तु सम्पदः।।

6. **वसन्ततिलका –** (चौदह अक्षरों वाला समवृत्त छन्द) (त, भ, ज, ज, ग, ग)

लक्षण – उक्ता वसन्ततिलका तभजाजगौ गः।

वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक पाद में तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरु के क्रम से 14 वर्ण होते हैं।

उदाहरण –

त भ ज ज ग ग

पापान्निवारयति योजयते हिताय

ऽ ऽ । ऽ ।। । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

गुह्यान्निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।

आपद्गत च न जहाति ददाति काले

सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।।

उदाहरण –

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यम्

ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽऽ

तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु

मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।

चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्

सत्संगतिः कथ किं न करोति पुंसाम्।।

7. **मालिनी –** (15 अक्षरों वाला समवृत्त) (न, न, म, य, य)

लक्षण – ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।

मालिनी के प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण, यगण, यगण के क्रम से 15 अक्षर होते हैं। इसमें आठ और सात वर्णो के पश्चात् यति होती है।

नोट – भोगी (सांप) द्विजिहव्रः आदि नाम भेद से आठ प्रकार का होता है।

लोक–सात लोक हैं।

अतः यहां भोगी 8 अक्षरों का तथा लोक सात अक्षरों का प्रतीक है।

उदाहरण –

न न म य य

जयतु जयतु देशः सर्वतन्त्रस्वतन्त्रः

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

प्रतिदिनमिह वृद्धिं यातु देशस्य रागः।

वज्रतु पुनरयं नो दासता मन्यदीयाम्

भवतु धनसमृद्धिः सर्वतो भावसिद्धिः।।

अन्य उदाहरण –

नगण नगण मगण यगण यगण

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूष पूर्णा

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

स्त्रिभुवनमुपकार–श्रेणिभिःप्राणीयन्तः।

परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं

निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः किन्तः।।

अन्य उदाहरण –

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं

मलिनमपि हिमांशो र्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।

इयमधिकमनौज्ञा वल्कलेनापि तन्वी

किमिह कि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।

8. शिखरिणी – (17 अक्षरों वाला समवृत्त) (य, म, न, स, भ, ल, ग)

लक्षण – रसैःरुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी

जब छन्द के प्रत्येक चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और लघु गुरु के क्रम से 17 अक्षर हों तो उसे शिखरिणी कहते हैं। इसमें 6 तथा 11 वर्णों अनन्तर यति होती है। (रस = 6 और रुद्र = 11)

उदाहरण –

य म न स भ ल ग

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ

रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम् !

अखण्डं पुण्यानां फलमिह च तद्रूपमनघम्।

न जाने भोक्तारं कमिह समुहस्थास्यति विधिः।।

अन्य उदाहरण –

यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु

यदा किंचिज्ज्ञोहं गज इव मदान्धः समभवम्

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ। । । ।। ऽ ऽ । । । ऽ

तदा सर्वज्ञोस्मीत्यभवद्वलिप्तं मम मनः।

यदा किंचित् किंचिद्बुधजन सकाशादवगतम्

तदा मूर्खोस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः।।

अन्य उदाहरण –

करे श्लाघ्यस्त्यागः शिरसि गुरुपादप्रणयिता

मुखे सत्या वाणी विजयि भुजयोः वीर्यमतुलम्।

हृदि स्वच्छा वृत्तिः श्रुतमधिगतंच श्रवणयो–

र्विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम्।।

9. **शार्दूलविक्रीडितम्** – (उन्नीस अक्षरों वाला समवृत्त) (म, स, ज, स, त, त, ग)

लक्षण – सूर्याश्वैर्यदि मः स जौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण और गुरु के क्रम से 19 वर्ण होते हैं। इसमें 12 और 7 वर्णों के बाद यदि होती है। (सूर्य – 12 और अश्व 7 का प्रतीक है)

उदाहरण –

म स ज स त त ग

पातुं न प्रथमंव्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ।। । ऽ ऽ ऽ ।ऽ ऽ। ऽ

नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।

आद्ये वः कुसुम प्रवृत्ति समये यस्या भवत्युत्सवः

सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।।

अन्य उदाहरण –

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया

कण्ठः स्तम्भितवाष्प वृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।

वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्योकसः

पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।।

10. आर्या –

लक्षण – यस्याः प्रथमेपादे द्वादशमात्राः तथा तृतीयेऽपि।

अष्टदशा द्वितीये चतुर्थके पंचदश साऽऽर्या।।

अर्थात् जिसके प्रथम तथा तृतीय पाद में बारह–बारह (12–12) मात्राएँ हों और दूसरे पाद में अठारह (18) मात्राएँ तथा चौदे पाद में पन्द्रह (15) मात्राएं हों उसे आर्या छन्द कहते हैं। आर्या छन्द अनुष्टप् की भांति जाति या मात्रिक छन्द है। क्योंकि इसमें गण के द्वारा छन्द का नियंत्रण न होकर मात्राओं द्वारा होता है।

उदाहरण –

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।

ऽ ऽ। । ऽ ऽ ऽ ।।।। ऽ ऽ। ऽ ।ऽ ऽ ऽ

12 18

ज्ञानलव दुर्विदग्धं, ब्रह्मपि नरं न रंजयति।।

ऽ ।।। ऽ। ऽ ऽ ऽ ऽ।। ऽ। ऽ।। ऽ

12 15

अन्य उदाहरण –

आपरितोषाद् विदुषां, न साधु मन्ये प्रयोग विज्ञानम्।

बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः।।

अन्य उदाहरण –

अधरः किसलयरागः कोमल विटपानुकारिणी बाहू।

कुसुममिव लोभनीयं यौवनमंगेषु सन्नद्धम्।।

11. भुजंगप्रयातम् –

लक्षण – भुजंगप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः।

अर्थात् भुजंग प्रयात में चार यगण के क्रम से 12 वर्ण होते हैं। इसमें छः वर्णों के पश्चात् यति (विराम) होती है। इस छन्द की ध्वनि भुजंग (सांप) की चाल के समान उतार–चढ़ाव युक्त होती हैं।

उदाहरण –

य य य य

धनै र्निष्कुलीनाः कुलीना भवन्ति

। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽऽ । ऽ ऽ

धनैरापदं मानवाः निस्तरन्ति।

धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके

धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वम्।।

अन्य उदाहरण –

सदारात्मजज्ञातिभृत्यो विहाय
स्वमेतं ह्रदं जीवनं लिप्समानः।
मया क्लेशितः कालियेत्थं कुरु त्वं
भुजंग प्रयातं द्रुतं सागराय।

अन्य उदाहरण –

सदारात्मजज्ञातिभृत्यो विहाय
स्वमेतं ह्रदं जीवनं लिप्समानः।
माया क्लेखितः कालियेत्थं कुरु त्वं
भुजंग प्रयातं द्रुतं सागराय।

12. मन्दाक्रान्ता –

लक्षण – मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्।।

अर्थात् मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक पाद में मगण, भगण, नगण दो तगण और दो गुरु क्रम से 17 अक्षर होते हैं। इसमें चार, छः सात वर्णों के बाद यदि होती है।

जलधि = 4, रस = 6, नग (नग) = 7 इन अक्षरों पर यति होती है।

उदाहरण –

म भ न त त गग
मौनान्मूकः प्रवचन पटु र्वार्तुलो जल्पको वा
ऽ ऽ ऽ ऽ।।।।। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
धृष्टः पार्श्वे भवति च वसन्दूरतोऽप्यप्रगल्भः।
क्षान्त्या भीरुर्यदि न सहसे प्रायशो नाभिजातः
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः।।

अन्य उदाहरण –

नैतच्चित्रं यदयमुदधिश्यामसीमां धरित्री
मेकः कृत्स्नां नगरपरिघप्रांशु बाहु र्भुनक्ति।
आशंसन्ते समितिषु सुरा बद्धवैरा हि दैत्यै
रस्याधिज्ये धनुषि विजयं पौरुहूते च वज्रे।।

13. स्रग्धरा –

यह इक्कीस वर्णों का समवृत्त छन्द है। इसमें प्रत्येक सात वर्णों के पश्चात् अर्थात् सातवें, चौदहवें और इक्कीसवें अक्षरों पर यति होती है।

लक्षण – "म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।"

अर्थात् जिसमें क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण, तीन यगण हों तथा तीन बार मुनि अर्थात् (सात, सात, सात) वर्णों के बाद यति हो, स्रग्धरा छन्द कहते हैं।

ऽ ऽऽ ऽ।ऽऽ।।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ

या स्रष्टुः सृष्टिराद्या वहति विधिहुतं या हवि र्या च होत्री

म र भ न य य य

ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषय गुणा या स्थिता विश्व व्याप्यम्।

यामाहुः सर्वबीज प्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः

प्रत्यक्षाभिः प्रसन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः।।

2.4 अपनी प्रगति जांचिए

1 जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि नियमों से युक्त होती है, उसे क्या कहते हैं ?

2 छन्द–शास्त्र के प्रवर्तक कौन माने जाते हैं ?

3 छन्द–शास्त्र का अन्य नाम क्या है ?

4 छन्द के मध्य में विश्राम स्थल (अर्द्ध–विराम) को क्या कहते हैं ?

5 छन्द–शास्त्र में तीन–तीन अक्षरों के समूह को क्या कहते हैं ?

2.5 सारांश

जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि नियमों से युक्त होती है उसे छन्द कहते हैं। छन्दों के मुख्य रूप से दो भेद हैं – वर्णिक छन्द और मात्रिक छन्द। वर्णिक छन्द को वृत्त तथा मात्रिक छन्द को जाति छन्द भी कहते हैं। वर्णिक छन्दों के चरणों में गुरु–लघु–क्रम प्रायः समान होता है, परन्तु मात्रिक छन्दों में यह बन्धन नहीं होता। इस प्रकार प्रस्तुत इकाई में छन्द के स्वरूप उसके भेद तथा प्रमुख 12 छन्दों का विवेचन किया गया। वह प्रमुख छन्द निम्नलिखित है – अनुष्टुप्, आर्या, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, मालिनी, स्रग्धरा, वंशस्थ, शिखरिणी, मन्दाकान्ता, वसन्ततिलका तथा शार्दूलविक्रीडितम्। उपर्युक्त छन्दों के लक्षण तथा उदाहरणों द्वारा इनका विवेचन किया गया है।

2.6 मुख्य शब्दावली

- **छन्द –** जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि नियमों से युक्त हो।
- **गण –** छन्द–शास्त्र में तीन–तीन अक्षरों के समूह
- **यति –** छन्द के मध्य में विश्राम स्थल (अर्द्ध–विराम)
- **गति –** श्लोक का धारा प्रवाह में पढ़ा जाना
- **सम–छन्द –** चारों चरणों में वर्ण या मात्राएं समान होती हैं।

2.7 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर

1 छन्द

2 पिंगल ऋषि

3 वृत्तशास्त्र

4 यति या विराम

5 गण

2.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

1 छन्द के स्वरूप का विश्लेषण कीजिए।

2 छन्द के भेदों का विवेचन कीजिए।

3 यति तथा गति की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

4 मन्दाकान्ता तथा अनुष्टुप छन्दों के लक्षण तथा उदाहरणों का विश्लेषण कीजिए।

5 सम–छन्द, अर्थ–समछन्द तथा विषम छन्द का विवेचन कीजिए।

2.9 आप ये भी पढ़ सकते हैं

1 छन्दोऽलंकाराः–डॉ० त्रिलोकीनाथ द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

2 संस्कृत छन्द प्रवेशिका – रवि कुमार मीना, सुभाष चन्द्र

3 संस्कृत व्याकरण एवं छन्दोज्ञान – रमेश चन्द्र, रचना प्रकाशन, जयपुर

4 संस्कृत काव्य शास्त्र एवं काव्यांग (रस, अलंकार, छन्द) – डॉ० प्रीतिप्रभा गोयल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

5 छन्दःशास्त्रम् – श्री पिंगल ऋषि, निर्णय सागर प्रकाशन, मुंबई

इकाई – 3

कण्ठस्थश्लोकाः

इकाई की रूपरेखा

3.1 परिचय

3.2 इकाई के उद्देश्य

3.3 कण्ठस्थश्लोकाः

3.4 अपनी प्रगति जांचिए

3.5 सारांश

3.6 मुख्य शब्दावली

3.7 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर

3.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

3.9 आप ये भी पढ़ सकते हैं

3.1 परिचय

प्रस्तुत इकाई के माध्यम से विद्यार्थियों में श्लोकों को अर्थ सहित कण्ठस्थ करने की प्रवृत्ति को जागृत किया जाएगा तथा उनमें श्लोकों को शुद्ध लिखने की परम्परा को भी विकसित किया जाएगा। श्लोकों को यति–गति के साथ तथा सस्वर गायन का अभ्यास करवाया जाएगा। जिससे वे श्लोकोच्चारण कला में प्रवीण हो सकेंगे।

3.2 इकाई के उद्देश्य

- संस्कृत श्लोकों को कण्ठस्थ कर पाएंगे;
- श्लोकों का यति, गति के अनुसार सस्वर उच्चारण कर पाएंगे;
- श्लोकोच्चारण कला में प्रवीण हो सकेंगे;
- आपस में तथा समाज में संस्कृत भाषा तथा श्लोकों का व्यवहार कर सकेंगे।

3.3 कण्ठस्थश्लोकाः

नमूने के तौर पर परीक्षा में कोई चार लिखे।

1. यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु।।

2. त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव।
त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

3. अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रंचयति।।

4. येषां न विद्या न तपो न दानम्
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भूवि भारभूता
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

5. माता शत्रुः पिता वैंरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

6. काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकःपिकः।।

7. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

8. धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेताः युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।।

9. वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा –
न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

10. नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

11. आचारः परमो धर्मः आचारः परमं तपः।
आचार परमं ज्ञानं, आचारात् किं न साध्यते।।

12. विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।

13. न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य में योगमेश्वरम्।।

14. कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तृमिह प्रवृतः।
ऋते पित्वां न भविष्यन्ति सर्वे ये वस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः।।

15. न वेदयज्ञाध्यनैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः।
एवं रूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टु। त्वदन्येन कुरुद्रवीर।।

16. स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृत्यनुरज्यते च।
रक्षासि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंधा।।

17. न जायते म्रियते वा कदाचि–
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो–
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

18. जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।

19. हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।।

20. सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।

21. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

22. योगस्थः कुरु कर्माणि संगंत्यक्त्वा धनंजय।
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।

23. यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः।।

24. क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।

25. इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मतोऽनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि।।

26. या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।।

27. असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।

28. कः कस्य पुरुषो बन्धु किमाप्यं कस्य केनचित्।
एको हि जायते जन्तुरेक एव विनश्यति।।

29. विद्यानाम नरस्य रूपमधिंक प्रच्छन्नगुप्तं धनं,
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता,
विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्या विहीनः पशु।।

30. गुणानामेव दौरात्म्यात् धुरि धुर्यो नियुज्यते।
असंजातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गलिः।।

31. दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुंक्ते, तस्य तृतीया गतिर्भवति।।

32. अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विढग्धं ब्रह्माऽपि नरं न रंजयति।।

33. वरं पर्वतदुर्गेषु, भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खजनसम्पर्कः, सुरेन्द्रभवनेष्वपि।।

3.4 अपनी प्रगति जांचिए

1 श्लोक के मध्य में विश्राम स्थल (अर्द्ध–विराम) को क्या कहते हैं ?

2 श्लोक का धारा प्रवाह में पढ़ा जाना क्या कहलाता है ?

3 प्रायः प्रत्येक श्लोक में कितने पाद या चरण होते हैं ?

4 श्लोक के चार खण्डों को क्या कहते हैं ?

5 अनुष्टुप् छन्द का अन्य नाम क्या है ?

3.5 सारांश

प्रायः प्रत्येक श्लोक के चार खण्ड होते हैं, जो पाद या चरण कहलाते हैं। ह्रस्व या लघु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है, उसे एक मात्रा कहते हैं तथा दीर्घ या गुरु के उच्चारण काल को दो मात्राएँ कहते हैं। अतः जब श्लोक में मात्राओं की गिनती की जाती हैं, तब लघु की एक और गुरु की दो मात्राएँ गिनी जाती है। श्लोक के मध्य में विश्राम स्थल (अर्द्ध–विराम) को यति या विराम कहते हैं। श्लोक में गति, लय या प्रवाह का ध्यान भी रखना पड़ता है। गति का अर्थ है – श्लोक का धारा प्रवाह में पढ़ा जाना। इस प्रकार प्रस्तुत इकाई में श्लोक का सामान्य ज्ञान देते हुए विद्यार्थियों में श्लोकों को अर्थ सहित कण्ठस्थ करने की प्रवृत्ति को जागृत किया गया ताकि वे श्लोकों का सस्वर एवं शुद्ध गायन तथा लेखन भी कर सकें।

3.6 मुख्य शब्दावली

- **यति** – श्लोक के मध्य में विश्राम–स्थल (अर्द्ध–विराम)
- **गति** – श्लोक का धारा प्रवाह में पढ़ा जाना
- **पाद–चरण** – प्रायः प्रत्येक श्लोक के चार खण्ड

- **एक मात्रा** – ह्रस्व या लघु अक्षर के उच्चारण में लगने वाला समय
- **दो मात्राएं** – दीर्घ या गुरु अक्षर का उच्चारण–काल

3.7 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर

1 यति

2 गति

3 चार

4 पाद या चरण

5 श्लोक

3.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

1 इस पुस्तक में छपे श्लोकों से भिन्न पाँच श्लोकों को कण्ठस्थ कीजिए।

2 इस पुस्तक में छपे श्लोकों से भिन्न चार श्लोकों का शुद्ध लेखन कीजिए।

3 किसी दस श्लोकों का यति–गति के साथ सस्वर उच्चारण कीजिए।

4 यति तथा गति की अवधारणा को श्लोक सहित स्पष्ट कीजिए।

5 लघु–गुरु की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए किसी श्लोक में लघु तथा गुरु के चिह्न अंकित कीजिए।

3.9 आप ये भी पढ़ सकते हैं

1 संस्कृत व्याकरण एवं छन्दोज्ञान – रमेश चन्द्र, रचना प्रकाशन, जयपुर।

2 श्रीमद्भगवद्गीता – गीता प्रेस, गोरखपुर।

3 मेघदूतम् – महाकवि कालिदास, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

4 बुद्धचरितम् – महाकवि अश्वघोष, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।

5 रामायण – महर्षि वाल्मीकि, गीता प्रेस, गोरखपुर।